अक्टूबर-२०२४ ◆ वर्ष १३ ◆ अंक ०६ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अक्टूबर-२०२४

आसमान छूने को पक्षी,
व्याकुल है पिंजरे में।
नहीं भा रही दूध मलाई,
उसको इस बन्धन में।
स्वामी कहते यही प्रवृति है,
हर तन में हर मन में॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १५ १५६

24 Carat

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH

मसाले

सेहत के रखवाले

असली मसाले सच - सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२५
आश्विन शुक्ल चतुर्थी
विक्रम संवत्
२०८१
दयानन्दाब्द
२००

October - 2024

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

०७

१५

समाचार २९

हलचल ३०

०४	वेद सुधा
१३	क्या ईश्वर क्रूर तथा अन्यायी है?
१५	सुखी कैसे रहें?
१९	आर्यसमाज का राष्ट्र को योगदान
२२	भीतर की चाँदनी
२६	स्वास्थ्य- द्राक्षा
२७	कथा सरित- कहानी दयानन्द की
२८	सत्यार्थ मित्र बनें

स्वामी
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १३ अंक -०६

मुद्रण
द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

विद्या का नाश नहीं होता

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति।
देवांश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह।। - अथर्ववेद ४/२१/३

ताः न नशन्ति= वे नष्ट नहीं होतीं, **तस्करः न दभाति**= चोर नहीं दबाता है। **व्यथिः अमित्रः**= दुःखदायी शत्रु (भी), **आसाम न +दधर्षति**= इनका तिरस्कार नहीं कर सकता। **याभिः**= जिनके द्वारा, **देवान् यजते**= देवयज्ञ करता है, विद्वानों का सत्कार और सत्संगति करता है। **च ददाति**= और दान करता है। **गोपतिः**= इन्द्रिय-स्वामी जीवात्मा, **ज्योग्**= निरन्तर, **ताभिः सह**= उनके साथ, **सचते**= सम्बद्ध रहता है।

व्याख्या

इस मन्त्र में विद्या के गुणों का वर्णन और विवेचन है।

मनुष्य जो कुछ देखता-सुनता है, उस सबका संस्कार उसके आत्मा पर पड़ता है। साधारण रीति से यही भासता है कि जो कुछ हम देख-सुन रहे हैं वह क्रिया उतने ही समय के लिए है, जितने समय तक वह देखने-सुनने का कर्म चल रहा है, क्योंकि ऐसा भी होता है कि हमने किसी स्थान विशेष में कोई वस्तु देखी, देखकर हम चले आये। फिर उसका कोई विचार नहीं उठता, किन्तु कभी-कभी सहसा अथवा किसी कारण से उसकी स्मृति जाग खड़ी होती है। यह कैसे होता है? देखने की क्रिया तो कभी की नष्ट हो चुकी। अब फिर उसके सम्बन्ध में यह स्मृति कैसे उत्पन्न हुई? मानना पड़ता है कि जो कुछ हम देखते-सुनते हैं, उस सबका एक संस्कार आत्मा पर पड़ता है, जो अनुकूल साधन पाकर स्मृति के रूप में जाग खड़ा होता है। भाव यह निकला कि हमारी सारी क्रियाओं=चेष्टाओं की आत्मा पर एक अमिट सी छाप पड़ती है, जिसका मिटाना सरल नहीं है।

विद्या-ग्रहण करना भी एक क्रिया है, चेष्टा है। उसकी भी आत्मा पर छाप पड़ती है, संस्कार पड़ता है और वह संस्कार अमिट सा है। इसलिए वेद ने कहा-

न ताः नशन्ति। वे विद्या की छापें नष्ट नहीं होतीं।

संसार का धन, प्राकृतिक-सम्पत्ति, भौतिक ऋद्धिकाल पाकर नष्ट हो जाती हैं। जहाँ संयोग है, वहाँ वियोग अवश्यंभावी है। धन-सम्पत्ति आज एक के पास है। कल वह चला, चंचला उसे छोड़कर दूसरे के पास चली जाती है। वेद ने बहुत सुन्दर शब्दों में कहा भी है-

ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुपतिष्ठनत रायः। - ऋग्वेद १०/११७/५

धन तो रथ के पहियों की भाँति लोट-पोट होते रहते हैं और दूसरों-दूसरों के पास जाते रहते हैं।

आज एक धनी है कल वही निर्धन है। धन सांयौगिक पदार्थ है, सांयौगिक का वियोग होकर ही रहता है, किन्तु विद्या का नाश कैसे हो, वह आत्मा का गुण है। धन सांयौगिक है, चोर उसे चुरा सकता है, किन्तु विद्या को- **न दभाति तस्कर**- चोर नहीं दबा सकता, डाकू नहीं छीन सकता।

मानो इस मन्त्र के इस चरण का अनुवाद ही किसी कवि ने किया है-

हर्तुर्न गोचरं याति दत्ता भवति विस्तृता।
कल्पान्तेऽपि न या नश्येत् किमन्यद्विद्यया समम्।।

चोर की दृष्टि में आती नहीं और देने से बढ़ती है, सृष्टि-नाश होने पर नष्ट नहीं होती। विद्या के तुल्य ऐसी और कौन वस्तु हो सकती है?

किसी विरोधी शत्रु का क्या सामर्थ्य जो विद्वान् को दबा सके या विद्या का तिरस्कार कर सके-

नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति।

कोई दुःखदायी शत्रु विद्या का नाश नहीं कर सकता। विद्या के बल से मनुष्यों में उत्तमोत्तम श्रेष्ठ गुणों का विकास होता है, विद्या के कारण महाविद्वानों, ज्ञानियों की संगति में बैठने की योग्यता प्राप्त होती है। विद्यादान के कारण उसके पास गुणग्राही सज्जनों का सदा जमघट रहता है और वह उभयतः आदर का पात्र होता है। विद्यावान् और विद्यार्थी दोनों ही वर्ग उसका सत्कार करते हैं। विद्वानों की संगति से उसे दान देने, विद्यादान की उत्तेजना मिलती है और वह देता है। वेद कहता है-

देवांश्च याभिर्यजते ददाति च।

जिनके द्वारा विद्वानों का संग करता है और विद्यादान करता है।

किसी कवि ने मानो इसी मन्त्र-चरण का आशय ही कहा है-

संयोजयति विद्यैव नीचगापि नरं सरित्।
समुद्रमिव दुर्धर्षं नृपं भाग्यमतः परम्।।

जैसे नदी, नीचे जाने वाली नदी समुद्र-जैसे महाशय जलाशय से जा मिलती है। इसी प्रकार विद्या चाहे वह नीच पुरुष में क्यों न हो, वह उस विद्यावान् को राजा से मिला देती है और फिर भाग्य से।

कहीं किसी को भ्रम न हो जाये कि जैसे धन-सम्पत्ति दान देने से घट जाती है, जैसे किसी के पास एक करोड़ रुपये हैं, वह यदि पचास लाख किसी को दे दे, तो उसके पास शेष पचास लाख रह जायेंगे या किसी के पास पचास हजार बीघे भूमि है, उसमें से वह दस हजार बीघे भूमि किसी को दे डाले, तो उसके पास चालीस हजार बीघे शेष रह जायेंगे। इसी प्रकार संसार की दूसरी सम्पत्तियों की दशा है, वे देने से घटती हैं, और अवश्य घटती हैं, ऐसे ही विद्या भी दान देने से, बाँटने से घट जाती होगी। वेद इस भ्रम का मानो निरास करता हुआ कहता है-

ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह।

ऐसा ज्ञानपति=ज्ञानवान्- विद्या का निरन्तर दान करने वाला ज्ञानधन का धनी-निरन्तर विद्या से सम्बद्ध रहता है, अर्थात् देने से विद्या बढ़ती ही है, घटती नहीं है, अतः विद्यार्जन में पुरुषार्थी होकर विद्यादान में उससे भी अधिक उद्योग करो। वेद कहता है-

शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त संकिर। - अथर्ववेद ३/२४/५

सौ हाथों से कमा और हजार हाथों से बिखेर।

यह वचन कदाचित् विद्या के सम्बन्ध में ही है।

किसी कवि ने विद्या की महिमा गाते हुए कहा है-

ज्ञातिभिर्वण्ट्यते नैव चौरेणापि न नीयते।
दाने नैव क्षयं याति विद्यारत्नं महाधनम्।।

विद्यारत्नरूपी महाधन को सम्बन्धी लोग बाँट नहीं सकते, चोर इस ले-जा नहीं सकता, दान से यह नष्ट नहीं होता।

एक दूसरे कवि ने कहा-

न चोरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एवं नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।।

इसे चोर नहीं चुरा सकता, राजा नहीं छीन सकता, भाई नहीं बाँट सकते, फिर इसका कोई भार नहीं। व्यय करने पर

नित्य बढ़ती ही है, अतः विद्यारूपी धन सब धनों में प्रधान है, मुख्य है।

इसलिए विद्या की वृद्धि में सदा उद्योग करना चाहिए, क्योंकि वैदिक धर्म का विद्या के साथ अविनाभाव-सम्बन्ध है। मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षणों में विद्या को स्थान दिया है। यथा-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

धृति=धीरज=हौंसला, कार्य में विघ्न आने पर न घबराना; क्षमा=सहनशीलता; दम=मन को वश में रखना, मन की चंचलता दूर करना; अस्तेय=चोरी न करना, पराये पदार्थ का अनुचित रीति से प्रयोग न करना; शौच=अन्दर बाहर की शुद्धता, इन्द्रिय-निग्रह=इन्द्रियों को वश में रखना, ब्रह्मचर्य; धी=बुद्धि, विद्या=ज्ञान; सत्य=जो पदार्थ जैसा है, उसे ठीक-ठीक जानकर वैसा मानना, कहना; अक्रोध=क्रोध न करना, मन वचन तथा कर्म से किसी को दुःख न देना, अर्थात् अहिंसा।

वेद का मुख्य अर्थ भी विद्या का साधन है। विद्या के बिना मनुष्यत्व रह नहीं सकता, अतः वेद और वेदानुकूल शास्त्र विद्या पर बहुत बल देते हैं।

विद्या के इस महत्व को जान, विद्या के ग्रहण और प्रचार करने में सबको यत्न करना चाहिए।

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- स्वामी वेदानन्दतीर्थ सरस्वती
सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

नवलखा महल के बारे में पहले से काफी कुछ सुन व पढ़ रखा था। परन्तु आज यहाँ आकर दर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ। मन बहुत प्रसन्न हुआ- इस आर्य जगत् की धरोहर को देखकर। बहुत ही शानदार तरीके से व्यवस्थित किया है। वैदिक साहित्य के विपुल भण्डार के साथ-साथ विभिन्न विविधा बनाई गई हैं। आगे अपने परिवार सहित इस ऐतिहासिक स्थल को देखने के लिए पुनः अवश्य आऊँगा। मैनेजमेन्ट ट्रस्ट द्वारा गाईड आदि की व्यवस्था बहुत ही अच्छी तरह से की हुई है।

- स्वामी शिव मुनि; सुल्तानपुर (उ.प्र.) एवं नरेन्द्र कुमार आर्य; पलवल (हरियाणा)

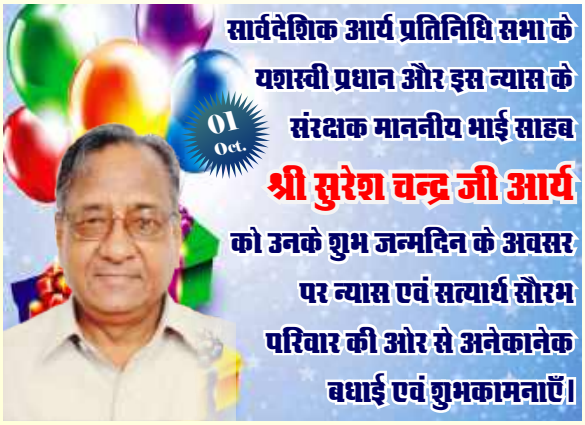

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु.51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

आत्म निवेदन

चमत्कार को नमस्कार?

विगत ५० वर्षों में महर्षि दयानन्द जी के साहित्य और सिद्धान्तों को, उनके निष्कर्षों को, अगर मैं कट्टरता शब्द का प्रयोग न करना चाहूँ तो कहूँगा पूर्णनिष्ठा के साथ मनसा-वाचा-कर्मणा मानते हुए, तथाकथित चमत्कारों के सन्दर्भ में एक सोच विकसित हुई जो समय के साथ-साथ दृढ़ होती गई उसके अनुसार-

(१) चमत्कार नाम की कोई चीज नहीं होती, कोई घटना नहीं होती। अगर हमें कोई चीज समझ नहीं आ रही है, हम उसको व्याख्यात नहीं कर पा रहे हैं तो भी या तो वह सृष्टिक्रम के नियमों के अनुकूल नहीं है अथवा वह किसी न किसी मानवीय चालाकी का प्रतिफल है, ऐसा मानकर उसे अमान्य कर देते थे।

(२) दूसरा विभूतियाँ या इस प्रकार की शक्तियाँ या तथाकथित सिद्धियाँ किसी शॉर्टकट से उत्पन्न नहीं होती वरन् यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि के मार्ग पर चलते हुए ही प्राप्त हो सकती हैं। अव्वल तो इस स्तर पर पहुँचना बच्चों का कोई खेल नहीं है। और अगर पहुँच भी जाए तो अध्यात्म के इस उच्चतम स्तर पर पहुँचकर योगी केवल मोक्ष की साधना करता है और विभूतियों का प्रदर्शन करके भीड़ जुटाना और ख्याति प्राप्त करना उसका उद्देश्य नहीं रह जाता है जैसा कि हम महर्षि दयानन्द जी के जीवन में देखते हैं।

निश्चितरूपेण महर्षि दयानन्द साधना के जिस स्तर पर थे उन्हें विभूतियाँ प्राप्त थीं परन्तु उसका दिखावा वह कभी नहीं करते थे। महर्षि जी के पूरे जीवन-चरित्र को पढ़ने पर कुछ घटनाएँ निश्चित रूप से ऐसी मिलती हैं जहाँ उनकी अलौकिक शक्तियाँ प्रदर्शित होती हैं परन्तु इनके प्रदर्शन के लिए उन्होंने कोई प्रयास नहीं किए। ये अनायास ही प्रकाशित हो गईं। उदाहरण के लिए उनके लिए जब एक व्यक्ति दूध लेकर आया तो उन्होंने कहा कि भाई दूध मत लाया करो क्योंकि अशान्ति का दूध मुझे पसन्द नहीं। हुआ क्या था? वह व्यक्ति जो दूध लाया था एक सज्जन के यहाँ नौकरी करता था। उन सज्जन ने उसे आदेश दिया था कि स्वामी जी के पास दूध लेकर चले जाना। परन्तु जब वह दूध लेकर जा रहा था तो सज्जन की माता जी को यह पसन्द नहीं आया और उन्होंने साधुओं को कई प्रकार के अपशब्द कहकर कहा था कि इनको दूध पिलाना व्यर्थ है। अब यह घटना

स्वामी जी को कैसे पता चली? निश्चित रूप से उनकी अलौकिक सिद्धियों को यह श्रेय प्राप्त होता है। इसी प्रकार से उदयपुर के नवलखा महल में जब वह प्रवास कर रहे थे तो एक दिन प्रातःकाल पास के एक जलाशय

में जल पर समाधि लेकर आनन्दमग्न हो गए। उनकी यह अवस्था उनके नवदीक्षित शिष्य सहजानन्द ने अनायास देख ली और इसे प्रचारित कर दिया। इसलिए आर्य समाज के इतिहासकारों की स्वीकृति इस घटना को मिली। यह निश्चित रूप से, प्रत्यक्ष रूप से स्वामी जी की साधना का प्रतिफल था। तो चमत्कारों के सम्बन्ध में या ऐसी घटनाओं के सम्बन्ध में जो अतीन्द्रिय प्रतीत होती हैं, अलौकिक प्रतीत होती हैं, योगज विभूति एकमात्र कारण है ऐसा मन में दृढ़ता के साथ स्थापित हो गया। अर्थात् जो व्यक्ति योगी नहीं वह इस प्रकार के कारनामे नहीं कर सकता और योगी होना कोई आसान कार्य नहीं है उसके लिए अष्टांग योग विशेष रूप से यम और नियम की पहली जो दो सीढ़ियाँ हैं उन पर आरोहण अत्यन्त आवश्यक है। और यह भी कि ऐसा योगी प्रदर्शन की पूर्ण अनिच्छा रखता है। मैं समझता हूँ कि प्रायः आर्यसमाजी भाई-बहनों का यही मत होगा।

परिणामस्वरुप जब भी ऐसी किसी घटना की चर्चा आती थी या टेलीविजन पर दिखाई जाती थी तो कई बार तो पूर्णतः प्रमाणित जैसी लगती थी, विवेक पूर्ण चिन्तन-मनन के पश्चात् भी उसके पीछे कोई कलाकारी दिखाई नहीं देती थी, उसके बाद भी उक्त मनः स्थिति के कारण हम यह कहकर उस पर ध्यान नहीं देते थे कि कोई ना कोई इसमें हाथ की सफाई या इसी प्रकार की चालाकी है जिसे हम पकड़ नहीं पा रहे। पिछले कुछ वर्षों से टेलीविजन पर ऐसी सैकड़ों घटनाएँ दिखाई जा रही हैं कि बुद्धि चकरा जाती है परन्तु मन की जो अवस्था बन चुकी थी उसमें यह चमत्कार फिट नहीं होता था। सत्य जैसा प्रतीत होने पर भी उसे आभासी की श्रेणी में अवश्य रख देते थे, इस प्रकार उसे हमारी अस्वीकृति मिलती थी। आलम यह हो गया है कि हम इस प्रकार के कार्यक्रमों को देखते ही नहीं।

गत दिनों आर्यजगत् के हमारे एक मित्र ने बताया कि एक गुरुकुल के बच्चों ने एक कार्यक्रम में आँखों पर पट्टी बाँधकर विभिन्न रंगों की सफलता पूर्वक पहचान की, नोटों के नम्बर तक बन्द आँखों से ही बता दिए। हमने ऊपर वर्णित मानसिकता के चलते इसको उपेक्षणीय माना और गुरुकुल के विद्यार्थियों द्वारा इस प्रकार के प्रदर्शन पर असहमति प्रकट की। (हमारा मत अभी भी वही है।) तत्पश्चात् गुरुकुल के आचार्य जी ने दूरभाष पर हमें बताया कि कुछ विशिष्ट ट्रेनिंग के द्वारा इन बच्चों में यह शक्ति विकसित की गयी है। इससे पीनियल ग्रन्थि को उद्बुद्ध किया जाता है तथा इसे थर्ड आई कहा जाता है। संगीत की धुन पर अभ्यास भी कराया जाता है। उन्होंने हमें वीडियो भी भेजे और यह भी बताया कि एक संस्थान में इस पर शोध हो रहा है और सघन अभ्यास से इसके द्वारा अन्य के मन को भी पढ़ा जा सकता है। उन्होंने कहा वे उन बच्चों को उदयपुर भी भेजने हेतु तत्पर हैं ताकि हम स्वयं उनकी परीक्षा ले सकें। परन्तु हमने यही निवेदन किया कि हमें आपके निष्कर्ष पर विश्वास है, आप भी उसी धारा में पले-बढ़े जिसमें हम। फिर एक गुरुकुल के प्रतिष्ठित आचार्य हैं, अतः हमने फोन पर एवं पत्रिका में खेद भी प्रकाशित किया।

यह बात अलग है कि उन वीडियोज को देखने और यह दिखते हुए भी कि बच्चे आँख पर पट्टी बाँधते हुए चमत्कारी प्रदर्शन कर रहे हैं, हम दृढ़ आर्य संस्कारों के चलते चमत्कार को नमस्कार करने को तत्पर नहीं हैं।

विशेष रूप से तब जब हम स्वयं १९७३ में अपने जोधपुर प्रवास के समय में ऐसा चमत्कार कर चुके हैं। एम. ए. मनोविज्ञान में एक प्रायोगिक टेस्ट इस प्रकार का होता है कि आपको सामने वाले व्यक्ति को एक-एक करके कुछ वजन देने होते हैं और उसे बन्द आँखों से उनका उसके अनुसार वजन का अनुमान कर बताना होता है। हमने लगातार जब १० अनुमान पूर्णतः ठीक बता दिए अर्थात् २० ग्राम को २० और ५० ग्राम को ५० आदि तो छात्र ने प्रयोग बन्द कर दिया कि इतना सटीक अनुमान किसी इंसान का नहीं हो सकता अतः हमारे गाईड इस परिणाम को स्वीकार नहीं करेंगे। हमने यह चमत्कार कैसे किया? शायद उसी में उक्त चमत्कारों का रहस्य निहित है।

पर यह बात यहीं समाप्त नहीं होता। आर्यसमाज की रीति-नीति और सिद्धान्तों का प्रश्न इसमें गुम्फित है। इस लेख में हम इस सब तमाशे/विज्ञान (?) पर एक सतर्क दृष्टि डालने का प्रयास करेंगे परन्तु विनम्र निवेदन है कि कोई भी आर्य बन्धु इसे अपनी आलोचना नहीं समझे। आजकल आर्यजगत् की यह स्थिति हो गयी है कि कोई भी सत्य के अन्वेषण का मार्ग नहीं अपनाता। जिस विषय पर विमर्श होना चाहिए उसे उठाता भी नहीं है क्योंकि भय यह रहता है कि अमुक नाराज हो जाएगा। यह आदर्श नहीं है, न ऋषि के आदेश की पालना इस मानसिकता में सम्भव है और न ही आर्यसमाजोदय।

अस्तु! यह तो हो गया। परन्तु फिर प्रश्न तो हजारों खड़े हो गए। अब तक जिन घटनाओं को प्रत्यक्ष प्रमाण जैसी होने पर भी नकारते रहे क्या उनके साथ न्याय किया? यदि गुरुकुल के बालकों का प्रदर्शन सत्य है तो फिर उन सैकड़ों अन्य का क्यों नहीं? अगर इस प्रकार के प्रदर्शनों को आर्यसमाज के मंचों की शोभा माना जा सकता है तो फिर उन अन्यों को भी क्यों न आर्यसमाज के कार्यक्रमों में आमंत्रित किया जाय?

मस्तिस्क में उमड़-घुमड़ रहीं ऐसी ही अनेक घटनाओं में से कुछ एक विस्तार से प्रस्तुत हैं।

आकाशी व्यास

टीकमगढ़ मध्यप्रदेश में एक दरवाजा है ताल दरवाजा। उसके पास परितोष व्यास जी का मकान है जो एक व्यवसायी हैं। उनकी बड़ी बेटी का नाम है आकाशी जो इन दिनों आकाश की ऊँचाइयों को नाप रही है। हुआ क्या? कोविड के दौरान उसने अपनी दादी की प्रेरणा से प्रयागराज के एक संस्थान से ऑन लाइन brighter mind का alpha plus एक कोर्स किया था। जिसको करने के पश्चात् वे आँख पर पट्टी बाँध रंगों को पहचानना, फोटो देखकर उनके बारे में काफी विस्तार से बता देना आदि कारनामे करने लगीं। प्रश्न उठता है कि क्या यह सम्भव है? क्या यह विज्ञान है या कोई ट्रिक?

नई दुनिया अखबार के अनुसार इस संस्थान के रामकृष्ण द्विवेदी कहते हैं यह सब न्यूरो साइंस है। १५ वर्ष तक के बच्चों में Neuroplasticity अच्छी होती है अतः इस विद्या (?) के लिए यही या इससे कम आयु सही है। उनका कथन है कि वास्तव में हम आँख से नहीं ब्रेन से देखते हैं तथा ब्रेन से ही सुनते हैं अतः अभ्यास से ब्रेन में न्यूरोन्स के कनेक्शन बन जाते हैं। यह कुल

३० घण्टे का कोर्स होता है जो तीन माह में पूर्ण किया जाता है। कोर्स के दौरान जंक फूड बन्द कर दिए जाते हैं तथा दो सप्ताह तक कद्दू लौकी की सब्जी खिलायी जाती है। आकाशी के अचंभित कर देने वाले कारनामों की अनेक मीडिया संस्थानों ने जाँच की वह एक भी बार असफल नहीं हुयी।

पत्रिका के अनुसार आकाशी जहाँ फोटो को छूकर उस व्यक्ति के बारे में बहुत सारी जानकारी दे देती है वहीं उसकी बीमारी का निदान करके उसके इलाज के बारे में भी बता देती है। यह उस तरह से है जैसे वह फोटो को अपने हाथ से Scan कर बीमारी का पता लगा लेती हो।

न्यूज १८ ने एक कार्यक्रम में आकाशी को मोबाइल पर स्व. राजीव गाँधी की फोटो दिखायी। तो उसने उन्हें पहचाना भी फोटो में उनके कपड़ों के बारे में बताया और उनकी मौत बम विस्फोट से हुयी यह भी बताया। आकाशी ने तो महात्मा गाँधी के फोटो के बारे में यह तक बता दिया कि यह ओरिजिनल फोटो नहीं है बल्कि फोटो से फोटो खींचा गया है।

विस्तार टी.वी. मध्य प्रदेश ने एक बड़ा शो आकाशी पर किया। जिसमें पचासों लोग मौजूद थे सभी ने उनसे प्रश्न किये। आकाशी एक भी बार असफल नहीं हुयी। एक सज्जन ने उन्हें मोबाइल पर बुर्ज खलीफा की तस्वीर दिखाई तो वह बोलीं- यह कोई मान्यूमेंट जैसा है। फिर और ज्यादा पूछने पर बताया कि यह बुर्ज खलीफा है।

राहुल गाँधी के फोटो के बारे बताया कि ये एक मेल पॉलिटिशियन हैं जिनकी अभी-अभी अचानक से बहुत ज्यादा फैन फॉलोइंग बढ़ गई है। बीजेपी से नहीं है कांग्रेस से होना चाहिए। यह अपनी पार्टी में बहुत सारे परिवर्तन करना चाह रहे हैं जो नहीं कर पा रहे हैं।

लोकमान्य तिलक के फोटो के बारे में कहा कि यह फोटो नहीं ड्राइंग होनी चाहिए और यह एक फ्रीडम फाइटर होने चाहिए। कुछ कठिनाई से, परन्तु फिर नाम बताया 'बाल गंगाधर'।

इण्डिया गेट का फोटो मोबाईल में दिखाने पर आकाशी ने कहा यह स्मारक है किसी देश की कैपिटल में है इसमें कोई पॉजिटिव नेगेटिव एनर्जी का प्रश्न नहीं है यह केवल घूमने जैसी जगह है। अन्त में नाम भी बताया इण्डिया गेट। एक व्यक्ति ने जब आकाशी को एक फोटो दिखाया तो बताया यह दो छोटे बच्चों का फोटो होना चाहिए और फिर कहा कि आगे आप जो पूछे उत्तर दूँगी।

यह फोटो कहाँ खिंचा और किसने खींचा का उत्तर दिया कि उनके पेरेंट्स जैसे किसी ने खींचा है। फोटो में दो बच्चे हैं इनमें से छोटे वाले की अर्निंग ज्यादा होगी या है। फोटो इनके पापा या ऐसे ही किसी ने खींची है।

आकाशी को विस्तार टी.वी. का लोगो दिखाया गया जो न तो कोई स्मारक था और न ही कोई व्यक्तित्व का फोटो। इस पर लोगों को आशंका थी कि आकाशी चूक जाएगी क्योंकि वह इसको किसी व्यक्ति का फोटो या स्मारक ही समझेंगी। परन्तु उन्होंने ठीक-ठीक बताया कि यह लोगो है। लोगों को पढ़ भी दिया कि इस पर लिखा है विस्तार न्यूज़। इस सारे समय आकाशी की आँख पर मोटी पट्टी बंधीं थी।

अब एक अन्य प्रसिद्ध शो की बात कर लेते हैं। कुछ लोगों का दावा है कि वे सूंघकर पढ़ लेते हैं। के.बी.सी. के बारे में आज कौन नहीं जानता होगा? सदी के महानायक कहे जाने वाले अमिताभ बच्चन जी के सामने वंशी चौहान नाम की एक बच्ची ने आँख पर पट्टी बाँधकर एक पुस्तक के कई पेजों को पढ़कर के बताया। उसका कहना है

कि वह आँखों से देखने की बजाय सूँघ करके पढ़ सकती है। ट्रेनिंग देने वाली संस्था का नाम इस बच्ची ने भी ब्राइटर माइंड कोर्स का लिया। एक बात और कही कि वे एक स्पेशल मेडिटेशन म्यूजिक बनाते हैं जिसके सहारे से यह क्षमता विकसित की जाती है। इस बच्ची ने अपनी आँखें पट्टी के सहारे बन्द करवा, उन्हें दिए एक ट्रे में रखे कई ऑब्जेक्ट्स के नाम और उनके रंग सफलतापूर्वक बताए। यह सारा कार्यक्रम एक अच्छी खासी ऑडियंस के सामने हुआ और उसको टेलीविजन के माध्यम से सम्भवतः करोड़ों की संख्या में लोग देख रहे होंगे, आखिर KBC अति प्रसिद्ध शो है। बच्ची के पिता से जब पूछा गया कि उन्होंने कहाँ से यह कोर्स कराया तो उन्होंने कमलेश भाई पटेल नाम के एक सज्जन का नाम लिया जो 'हैप्पीनेस' के नाम से कोर्स चलते हैं।

अभी यहीं पर बस नहीं है। शार्क टैंक जैसे आज के सर्वप्रसिद्ध शो पर एक सरदार जी अपनी बच्चियों के साथ आए। शार्कटैंक का नाम आप सभी ने सुना होगा, शार्कटैंक में इस चक्र तक पहुँचना भी आसान नहीं है। वहाँ सरदार जी ने अनेक आइटम्स आँख पर पट्टी बाँधे हुए अपनी दोनों बेटियों चहक और महक से पहचान करवाए। नोटों के नम्बर बताए, और उनमें से एक बच्ची तो सर पर रगड़ के भी कुछ कर रही थी। इसको उन्होंने एक जापानी साइंटिफिक तकनीक बताया जिसका नाम ब्रेन ऑप्टिमाइजेशन है।

सरदार जी ने जो कम्पनी बनाई उसका नाम 'हेड एंड हार्ट' है। उनका दावा है कि कोविड से पहले ५००० बच्चों को ट्रेन कर चुके हैं और कोविड के बाद ११०० बच्चे ७ देशों के जुड़े हैं। उन्होंने बताया कि हिमाचल एजुकेशन बोर्ड ने उनके प्रकल्प को अपने पाठ्यक्रम में अप्रूव कर दिया है, ६ से १२ कक्षा के बच्चों तक के लिए। यद्यपि इन सरदार जी को शार्कटैंक ने वित्तीय रूप से सपोर्ट नहीं किया पर वे प्रभावित अवश्य दिख रहे थे यद्यपि उनमें से एक ने स्पष्ट यह भी कहा कि उनको यह मैजिक ट्रिक लगती है।

पाखण्ड और अंधविश्वास का महर्षि दयानन्द ने प्रबल विरोध किया। यह मनुष्य को बौद्धिक रूप से पंगु बना देता है। चिन्तन का यहाँ कोई अवकाश नहीं है। जहाँ तक मैं समझा हूँ महर्षि दयानन्द चमत्कार जैसी चीजों को प्रश्रय नहीं देते। उनका मत यह तो है कि चमत्कार जैसी लगने वाली शक्तियाँ केवल योगियों को प्राप्त है। महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र (देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय पृष्ठ १६६) लिखा है- 'नयी रोशनी वालों का यह विचार ठीक नहीं है कि योग में कुछ नहीं है। अब भी ऐसे बहुत से योगी विद्यमान हैं जो पृथिवी से एक हाथ ऊँचे उठ सकते और स्थिर रह सकते हैं।' स्पष्ट है स्वामी जी योगज विभूतियों की सिद्धि स्पष्टतः मानते थे परन्तु यह बात सत्य है कि वे मुमुक्षु होकर इनका प्रदर्शन करने में रुचि नहीं रखते। तो फिर आज इस प्रकार के प्रदर्शनों पर आर्यसमाज का क्या आधिकारिक मत है? यह स्पष्ट होना चाहिए। विशेष रूप में तब जबकि एक अत्यन्त प्रसिद्ध आचार्या उपरोक्त आँख बंद कर रंग पहचानने आदि तथाकथित चमत्कार के सम्बन्ध में निःसंकोच कहती हैं कि यह वेद विद्या है। क्या उनका मत आर्यसमाज को ग्राह्य है?

प्रश्न स्वाभाविक है कि हमने ऊपर आकाशी, के.बी.सी. तथा शार्कटैंक शो की जो चर्चा की है उनको एक बड़ी

सभा के समक्ष दिग्गज लोगों के समक्ष दिखाया गया, कोई भी कोई कमी अथवा कोई चालाकी नहीं पकड़ पाया फिर इनके बारे में हमारे आचार्यों और विद्वानों की क्या सम्मति है?

एक ऐसा ही उदाहरण और देना चाहूँगा। एक मंच पर एक सज्जन खड़े हैं वे संयोजन करने वाले संयोजक से कहते हैं कि कोई भी एक व्यक्ति को सामने लावें। संयोजक भीड़ में से एक व्यक्ति को बुला देता है, कहता है कि इनका नाम और जन्म समय बताओ। आप आश्चर्य करेंगे कि वह व्यक्ति अपनी जेब में से एक पर्ची निकालता है जो कि उसकी जेब में पहले से थी। तलाशी लेने पर वही एक पर्ची थी अर्थात् और कोई पर्ची नहीं थी। उस पर्ची पर एक घड़ी बनी थी जिसमें १२ बजकर पाँच मिनट बजे थे तथा ओम प्रकाश लिखा था। जी हाँ! उस व्यक्ति का नाम ओम प्रकाश था और उसका जन्म १२ बजकर ५ मिनट पर हुआ था। अब यह 'वेद विद्या' है अथवा कोई 'ट्रिक' इसकी व्याख्या सुधी जन करें।

महर्षि दयानन्द ने अपने सार्वजनिक जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में हरिद्वार में जाकर पाखण्ड खण्डिनी पताका लहरायी थी। आर्यसमाज भी इसमें पीछे नहीं रहा। परन्तु ऐसे चमत्कारों को वेद विद्या अथवा योग विद्या कहकर आचार्यों, विद्वानों द्वारा स्वीकृति देना शायद पहली बार देख रहे हैं। अतः हमारे इस आलेख को एक समस्या की ओर ध्यानाकर्षण के रूप में देखें न कि आलोचना के रूप में यही प्रार्थना है।

अब हम उन प्रयासों की चर्चा भी कर दें जो विभिन्न माध्यमों से इन तथाकथित चमत्कारों की वास्तविकता जनता के समक्ष लाने का प्रयास कर रहे हैं। अगर हम लिखें कि आर्यसमाज इस दिशा में सो रहा है तो यह वास्तविकता होगी यद्यपि पूर्वानुसार बहुत से लोग नाराज हो जायेंगे। हमने पहले भी लिखा था जो काम आर्यसमाज नहीं कर रहा वह डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर कर रहे हैं, सनथ कर रहे हैं और आज हम लिखना चाहते हैं यह कार्य तर्कशील परिषद् छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष कर रहे हैं।

तर्कशील परिषद् के छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष घोषणा करते हैं कि इस प्रकार का कोई चमत्कार अगर उनके सामने दिखाएँ तो उसको एक करोड़ रुपए का इनाम देंगे। यह घोषणा उन्होंने dma india online पर की। एक करोड़ के इनाम की घोषणा कोई छोटी बात तो नहीं, यह उनके इस विश्वास की द्योतक है कि सृष्टिक्रम से विरुद्ध कोई चमत्कार सम्भव नहीं है।

अब आर्यों को अपने विश्वास की परीक्षा करनी है।

– अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay
BHIM UPI

क्या ईश्वर क्रूर तथा अन्यायी है?

[वेदों पर किए प्रत्येक आक्षेप का उत्तर–आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक द्वारा]

आक्षेप

Rig Veda 6.26.3 Thou didst impel the sage to win the daylight, didst ruin Susna for the pious Kutsa. The invulnerable demon's head thou clavest when thou wouldst win the praise of Atithigva.

हे इन्द्र! अन्न-लाभ करने के लिए तुम भार्गव ऋषि को प्रेरित करो। हव्यदाता कुत्स के लिए तुमने शुष्णासुर का छेदन किया था। तुमने अतिथिग्व (दिवोदास) को सुखी करने के लिए शम्बरासुर का शिरच्छेदन किया था। वह अपने को मर्महीन (दुर्भेद्य) समझता था।

आक्षेप का उत्तर-

यहाँ आपने फिर चालबाजी कर दी, क्योंकि यहाँ भी अनुवादक और भाष्यकार का नाम नहीं दिया। ये अनुवादक और भाष्यकार दोनों ही नितान्त अनाड़ी हैं। जो शब्द वेद में हैं ही नहीं, उन्हें भी असुर वा ऋषि बनाकर यहाँ लाकर खड़ा कर दिया। इस मन्त्र में कहीं भार्गव ऋषि का नाम नहीं है, परन्तु यहाँ उन्हें अन्नलाभ के लिये प्रेरित करने की बात लिख दी। शुष्णम् का शुष्णासुर बना दिया और शम्बरासुर कहीं से लाकर खड़ा कर दिया और इन्द्र द्वारा उसका सिर कटवा दिया। जहाँ ऐसे मूढ़मति भाष्यकार होंगे, वहाँ सुलेमान रजवी तो वेद का उपहास करने आ ही जायेगा। यहाँ सुलेमान रजवी को ऋषि दयानन्द का भाष्य दिखाई नहीं दिया। हम यहाँ ऋषि दयानन्द का भाष्य उद्धृत करते हैं-

पदार्थः- (त्वं) (कविम्) विद्वांसम् (चोदयः) प्रेरय (अर्कसातौ) अन्नादिविभागे (त्वम्) (कुत्साय) वज्राय (शुष्णम्) बलम् (दाशुषे) दात्रे (वर्क्) छिनत्सि (त्वं) (शिरः) (अमर्मणः) अविद्यमानानि मर्माणि यस्मिँस्तस्य (परा) (अहन्) दूरीकुर्याः (अतिथिग्वाय) योऽतिथीनागच्छति तस्मै (शंस्यम्) प्रशंसनीयं कर्म (करिष्यन्)।

भावार्थः- राजा विद्याविनयादिशुभगुणान् राजकार्येषु योजयेत्, उन्नतिञ्च करिष्यन् विद्यादीनां दाता भूत्वा प्रशंसां प्राप्नुयात्।

पदार्थ- हे तेजस्विराजन्! (त्वं) आप (अर्कसातौ) अन्न आदि के विभाग में (कविम्) विद्वान् की (चोदयः) प्रेरणा करिये और (त्वं) आप (कुत्साय) वज्र के लिये और (दाशुषे) दान करने वाले के लिये (शुष्णम्) बल को (वर्क्) काटते हो और (त्वं) आप (अमर्मणः) नहीं विद्यमान मर्म जिसमें उसके (शिरः) शिर को (परा, अहन्) दूर करिये और (अतिथिग्वाय) अतिथियों को प्राप्त होने वाले के लिये (शंस्यम्) प्रशंसा करने योग्य कर्म को (करिष्यन्) करते हुए वर्तमान हो इससे आप सत्कार करने योग्य हो।

भावार्थ- राजा विद्या और विनय आदि श्रेष्ठ गुणों से युक्त जनों को राजकार्यों में युक्त करे और उन्नति को करता हुआ विद्या आदि का दाता होकर प्रशंसा को प्राप्त होवे।

यह भाष्य सामान्यजन के लिए निश्चित ही दुर्बोध्य है। समयाभाव के कारण ऋषि दयानन्द के भाष्य में कहीं-कहीं क्लिष्टता व अस्पष्टता आ गयी है। यहाँ हम इसे स्पष्ट व

सरल करने का प्रयास करते हैं-

यहाँ प्रतापी राजा से प्रार्थना की गयी है कि वह अपने विद्वान् मन्त्रियों को ऐसी प्रेरणा करे कि वे सम्पूर्ण राष्ट्र के नागरिकों में अन्न व धन आदि का समुचित वितरण करें। कभी ऐसा न होने पावे कि कुछ लोग अत्यन्त सम्पन्न हो जावें और कुछ लोग अति निर्धनता भरे क्लेश को भोगने को विवश हो जावें। ऐसा करना स्वयं को अन्यायकारी के रूप में सिद्ध करना है। आज हमारे राष्ट्र वा विश्व में गरीबी एवं अमीरी के बीच जो अत्यन्त दूरी है, वह राष्ट्रों व विश्व के नीतिनिर्धारकों के अन्यायकारी अथवा अज्ञानी होने का जीवन्त प्रमाण है।

वह राजा दूसरा कार्य यह करे कि दुष्टों, जो दूसरों के धन आदि का शोषण करते हैं, चोरी, लूट व घूसखोरी करते हैं अथवा उन्हें नाना प्रकार के झूठ, छल व कपट से लूटते हैं, को दण्ड देने के लिए उन अपराधियों के शुष्ण अर्थात् शोषक बल को नष्ट कर दे। वर्तमान में बड़े-बड़े नेता, पूँजीपति, राज कर्मचारी, अधिकारी वा व्यापारी नाना हथकण्डे अपनाकर प्रजा का शोषण करते हैं, उन हथकण्डों को जड़ मूल से काट देवे, जिससे वे फिर कभी शोषण न कर सकें। जो धनबल के कारण शोषण करते हैं, राजा उनकी सम्पत्ति का अधिग्रहण करके शोषितों के हित में प्रयोग करे। जो जनबल के कारण लूटते हैं, उनके जनबल को उनसे दूर करने का उपाय करे, उनके अनुयायियों में उनके अपराध को प्रचारित करके उसे अलग-थलग कर दे। जो कोई अपने पद के कारण नागरिकों का शोषण करता हो, तो उसे तत्काल पदच्युत् कर दे। यदि कोई शारीरिक बल वा अस्त्र-शस्त्रादि के बल पर शोषण करता है, तो उके अंगभंग करके उससे शस्त्रादि छीन ले। यहाँ 'शुष्णम् वर्क' अर्थात् बल को काटने का यह लोकोपकारक अर्थ है। कहाँ से इसे शुष्णासुर बना डाला?

यहाँ दान करने वाले के लिए भी शोषण बल को काटने की बात कही गई है। इसका अर्थ है कि कोई दुष्ट व्यक्ति किसी दाता अर्थात् परोपकारी पुरुष का ही शोषण करने लगे, उसे परोपकारी कार्यों में दान न देने दे अथवा स्वयं ही उसका धन लूट ले, उसकी रक्षा के लिए भी इसी प्रकार शोषणकर्त्ता अपराधियों के बल को पूर्वोक्तानुसार नष्ट करने की बात की गयी है। इससे परोपकारी महानुभाव निर्विघ्न रूप से समाज व राष्ट्र की सेवा कर सकें।

आगे कहा है कि जिनके मर्म स्थान न हों, उनका शिर काट कर फेंक दे। इसका भाव यह है जिस प्रकार शरीर में कुछ मर्म स्थान होते हैं, जिन पर चोट लगने से व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है। उसी प्रकार शोषणकर्त्ताओं को यदि पूर्वोक्त उपायों से दुर्बल न किया जा सके, तो ऐसे शोषकों का शिरोच्छेदन करना ही एकमात्र विकल्प रह जाता है।

आज अपने देश में कड़ी दण्ड व्यवस्था न होने से भारी अराजकता मची हुई है, जिससे करोड़ों नागरिक दुःखी हैं और कुछ लोग सत्ता-धन आदि के मद में उनका भरपूर शोषण करके निरन्तर अधिकाधिक धनसम्पन्न हो रहे हैं। यह स्थिति समूची मानवता के लिए गम्भीर संकट उत्पन्न कर रही है।

यहाँ अनाड़ी भाष्यकार 'अतिथिग्व' पद से दिवोदास नामक किसी व्यक्ति का ग्रहण कर रहे हैं। इस पर क्या टिप्पणी करें? यह पद 'अतिथि+गम्लृगतौ+ड्वः प्रत्यय' से व्युत्पन्न है। (देखें- वैदिक कोष- आचार्य राजवीर (शास्त्री)) अब कोई अतिथिग्व से दिवोदास बनाये, उसे क्या कहें? यहाँ ऋषि दयानन्द ने जो अर्थ किया है, वही सत्य है। ध्यान रहे कि निरन्तर सत्योपदेश करने वाले भ्रमणशील आप्त विद्वान् पुरुष को अतिथि कहते हैं। इस विषय में महर्षि ऐतरेय महीदास का कथन है-

''य: श्रेष्ठतामश्नुते स वा अतिथिर्भवति'' (ऐ.आ.१/१/१)

अर्थात् जो विद्या और श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा श्रेष्ठता को प्राप्त होता है, उसे अतिथि कहते हैं। ऐसे अतिथि विद्वानों को प्राप्त होने वाले विद्या आदि धनों के लिए जो प्रशंसनीय व परोपकारी कार्य हैं, उन्हें राजा को भी करना चाहिए, तभी राजा सम्मान का अधिकारी होता है। इसका अर्थ यह है कि जैसे अतिथि वेदविद्या एवं श्रेष्ठ परोपकारक कर्मों के द्वारा अतिथि पद को प्राप्त करता है, वैसे राजा को भी बनना चाहिए। मूर्ख, छली-कपटी वा प्रमादी व्यक्ति को राजा कभी न बनावें।

इस मन्त्र का देवता इन्द्र होने से यह प्रकट होता है कि अपने विद्या, बल, तेज आदि से ऐश्वर्य को प्राप्त जितेन्द्रियतादि उत्तमोत्तम गुणों से युक्त व्यक्ति ही राजा बने और ऐसा इन्द्ररूप राजा ही इस प्रकार के कर्म करने में समर्थ हो सकता है, अन्य नहीं।

अब वेदविरोधी विचारें कि इस मन्त्र का कैसा अनर्थ करके वेद पर प्रहार करने का पाप कर रहे हैं। इस एक मन्त्र को ही किसी राष्ट्र का प्रमुख अपने आचरण में ले आवे, तो उस राष्ट्र का कायापलट हो सकता है।

लेखक- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, वेद विज्ञान मन्दिर
भागलभीम, भीनमाल, चलभाष- ९४१४८३४४०३

सुखी कैसे रहें?

आज हर देश, धर्म, वर्ग और अवस्था से सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति सुख, शान्ति और सन्तोष चाहता है। हर कार्य को करते हुए प्रत्येक की यथाशक्ति मनोभावना यही होती है, कि मुझे किसी तरह से सुख ही मिले तथा कभी भी कहीं से दुःख प्राप्त न हो। क्योंकि दुख में हर एक बेचैन हो जाता है और तब उस को अपना अस्तित्व भी भार मालूम होता है। इसीलिए ही प्रत्येक व्यक्ति प्रातः से सायं तक सुख तथा सुख-साधनों के संचय में लगा रहता है और रात को सोता भी इसी के लिए ही है। अर्थात् सब को हर समय सुख प्राप्ति की धुन सवार रहती है। अतएव सभी मनुष्यों के सभी प्रकार के कार्यों और प्रयासों का एक मात्र केन्द्र बिन्दु सुख ही है। यही एक ऐसी बात है, कि जिसके सम्बन्ध में सब एक स्वर से एकमत हैं। चाहे सब की दृष्टि में सुख का स्वरूप और मार्ग भिन्न क्यों न हो?

1. सुख-दुःख की परिभाषा-

कुछ का विचार है, कि संसार के पदार्थों में सुख है और कुछ समझते हैं कि अपने अन्दर ही सुख है। रोजमर्रा के जीवन की दृष्टि से जब हम सुख-दुःख के सम्बन्ध में सोचते हैं, तो ये दोनों पक्ष कुछ अधूरे ही लगते हैं। क्योंकि यदि अपने अन्दर ही केवल सुख-दुःख हों, तो फिर भौतिक पदार्थों के बिना भी सुख होना चाहिए। जबकि अपने अन्दर सुख मानने वाले भी भौतिक साधन जुटाते हुए देखे जाते हैं। यदि केवल संसार के पदार्थों में ही सुख हो, तो ऐसे पदार्थ रखने वालों को कभी दुःख नहीं होना चाहिए और एक चीज हर स्थिति में एक सी सुख देने वाली हो, पर ऐसा होता नहीं। पदार्थों से सुख मानने पर जो चीज किसी एक के लिए सुखदायक है, वह सबके लिए सदा सुख का कारण होनी चाहिए। अतः रोगी को भी स्वस्थ की तरह स्वादु भोज्य में स्वाद आना चाहिए?

प्रतिदिन के व्यवहार में हम ऐसा अनुभव करते हैं, कि जब कोई पदार्थ या बात हमारे अनुकूल होती है या उसके व्यवहार से अपनी इच्छा के अनुकूल प्रतीति होती है, तो हम सुख का अनुभव करते हैं या अपने आपको सुखी समझते हैं। अतः सबका अनुभव तो यही कहता है, कि हम अनुकूलता में सुख और प्रतिकूलता में दुःख अनुभव करते हैं।

2. चाहना और सुख-

प्रत्येक को अपनी आशा की पूर्ति पर सुख और उसके पूरा न होने पर दुःख होता है। जैसे कि किसी को प्यास लगी हो, तो वह अपने अपको बहुत दुःखी

मानता है और यहाँ तक कहता है, कि 'हाय! मैं प्यास से मर रहा हूँ। जल के मिल जाने पर वह एकदम सुखी हो जाता है। अतः जिस व्यवहार से बाधा, रुकावट और इच्छा की पूर्ति में अड़चन आती है, वह भी या वही दुःख है।

तभी तो हम देखते हैं, कि जिसकी चाहनाएँ पूर्ण होती हैं, वही सुख, शान्ति प्राप्त करता है, न कि केवल चाहनाओं को चाहने वाला। अतः जिसकी इच्छायें पूर्ण होती हैं, वही शान्त, सन्तुष्ट, निश्चिन्त और सुखी होता है। ऐसी स्थिति के लिए ही कहा है-

चाह गई, चिन्ता मिटी, मनुआ बेपरवाह।
जिनको कछु नहीं चाहिए, सो ही शहनशाह।।

हाँ, जब तक भौतिक शरीर है, तब तक तो कोई चाह रहित हो नहीं सकता। चाहों के पूरा न होने पर व्यक्ति इनकी पूर्ति की चिन्ता में ही लगा रहता है। संसार में चिन्ता ही सबसे बड़ी दुःख की जड़ है। दूसरी और निश्चिन्त होने पर ही व्यक्ति सन्तुष्ट और सुखी होता है।

3. सन्तोष और सुख-

वस्तुतः वही व्यक्ति सन्तुष्ट है, जिसकी प्रतिदिन की जरूरतें पूरी हो जाती हैं। जो इस दृष्टि से निश्चिन्त नहीं, वह कभी सन्तुष्ट भी नहीं हो सकता। यह ठीक है, कि कुछ व्यक्ति स्वभाव से सन्तोषी होते हैं, जो हर हाल में मस्त रहते हैं। परन्तु ऐसे लाखों में एकाध ही होते हैं, दुनिया में ऐसा व्यक्ति मिलना कठिन है और न ही ऐसे सन्तोष से दुनिया का व्यवहार चल सकता है। आजकल प्रायः सन्तोष के नाम पर आलस्य और अन्याय सहन का अभिनय किया जाता है। शास्त्रों में सन्तोष का जो वर्णन मिलता है, वह चाहना की पूर्ति होने पर ही देखा जाता है। अन्यथा **'ढिड्ढे न पाइयां रोटियां-ते-सब्बे गल्लां खोटियां'।** हाँ, व्यर्थ की चाहना से तो कुछ बनता नहीं। यथासम्भव प्रयास करने पर जो न्यायोचित् फल प्राप्त हो, उसमें सन्तुष्ट होना ही सन्तोष है।

हमारा मन इच्छाओं का भण्डार है, मन में उठने वाली इच्छाओं की कोई सीमा नहीं अतः किसी की भी सारी इच्छायें पूरी नहीं हो सकती। ऐसी स्थिति में सन्तोष का सहारा लेकर ही जीवन सुखी हो सकता है, अन्यथा हर इच्छा की पूर्ति के चक्र में व्यक्ति तड़प-तड़प कर ही रह जाता है।

प्रत्येक को सदा सन्तुष्ट रहने का यत्न करना चाहिए। जिससे प्रतिकूल परिस्थिति बेचैनी, आत्महीनता पैदा न कर सके। सन्तोष का मूलभाव यही है कि दूसरों की चीजों पर ललचाई नजर या भावना न रखना। सम्भवतः इसी भावना से कहा जाता है।

रूखा सूखा खा करी, ठण्डा पानी पी।
देख पराई चूपड़ी, क्यों ललचाइ जी।।

और ऐसी भावना वाला व्यक्ति ही 'हर हाल रहे मस्ताना' की भावना को चरितार्थ कर सकता है। दूसरों के ऐश्वर्य को देखकर रीसो-रीस में अपने परिश्रम से अधिक चाहना, तो वस्तुतः असन्तोष, लोभ ही है। जो कि दुःख अशान्ति का कारण बनता है, इसी से आज चारों ओर आपाधापी मची हुई है।

4. इच्छाओं की सीमा-

प्रत्येक का यह अनुभव है, कि इच्छाओं की कोई सीमा नही है। ये रबड़ की तरह बढ़ाने से बढ़ती हैं और घटाने से घटती हैं। दुनिया के पदार्थो की इच्छा पूरी करते-करते, वे तो पूरी नहीं होतीं, हम ही पूरे हो जाते हैं। अतः सभी इच्छाओं की पूर्ति तीन काल में भी नहीं हो सकतीं और न ही भौतिक शरीर के रहते हुए कोई इच्छारहित हो सकता है। हाँ, इच्छारहित तो केवल जड़ ही हो सकता है। जीवन तो मौलिक इच्छाओं को पूरा करने से ही चलता है, इसीलिए, पुरुषार्थचतुष्टय में काम (इच्छा) का अनिवार्य स्थान है।

इच्छाओं की अनिवार्यता के कारण ही इनको आवश्यकता के नाम से स्मरण किया जाता है। व्यवहारिक दृष्टि से जब हम इन पर विचार करते हैं, तो इस परिणाम पर पहुँचते हैं, कि मनुष्य की इच्छायें,

आवश्यकतायें अनन्त हैं और वे घटती-बढ़ती रहती हैं। ये मौलिक, सहायक और सुविधावर्धक या मनोरंजक के भेद से तीन प्रकार की हैं। इनमें परस्पर विरोध भी पाया जाता है। किसी विशेष इच्छा के अधिक तीव्र होने पर दूसरी मन्द पड़ जाती है। इस तरह कभी कोई प्रमुख हो जाती है और कभी कोई। ये थोड़ी देर के लिए पूर्ण होती हैं, अतः इनमें पुनरावृत्ति पाई जाती है। जहाँ ये स्थान, समय, रुचि के भेद से बदलती रहती हैं, वहाँ सामाजिक स्तर, सभ्यता और ज्ञान के विकास के साथ इनमें वृद्धि भी होती है। कभी कोई आवश्यकता आदत का रूप धारण कर लेती है।

5. सुख का मार्ग-

अर्थशास्त्र में चर्चित इच्छाओं के विविध पहलुओं पर विचार करने से हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं, कि न तो प्रत्येक की सारी इच्छायें पूरी हो सकती हैं और न ही शरीर के रहते हुए इच्छा रहित स्थिति हो सकती है। इसलिए सरल और सीधा सा मध्यमार्ग यही है, कि मनुष्य अपनी इच्छाओं को नियन्त्रित, व्यवस्थित, मर्यादित करे। अपने सारे दिन के कार्यों पर विचार कर अपनी दिनचर्या तथा जीवनचर्या को व्यवस्थित करे। जिससे अन्त में पश्चाताप न हो, कि मैंने अमुक कार्य तो किया ही नहीं? अर्थात् शरीर और संसार के व्यवहार के लिए जो इच्छायें आवश्यक हैं, उन्हीं की ही पूर्ति करे। व्यर्थ अपने आपको इच्छाओं का दास न बनाए। जब इच्छायें अपने वश में होंगी, तो व्यक्ति इनके पूरा न होने पर विचलित नही होगा। जैसे यान जब तक नियन्त्रण में रहता है,

तभी तक सुख का साधन बनता है, अन्यथा विनाश का जो ताण्डव नृत्य होता है, वह किसी से ओझल नहीं है।

मर्यादा में रहता हुआ ही नदी का जल हमारे अनेक कार्यों को सिद्ध करता है। परन्तु जब वह मर्यादा से बाहर हो जाता है, तो बाढ़ का रूप धारण कर हजारों की जान और अरबों की सम्पति का विनाश कर प्रलय का दृश्य उपस्थित कर देता है। यही आग, बिजली के सम्बन्ध में भी प्रतिदिन देखा और सुना जाता है। तभी आचार्य चाणक्य ने कहा है-

स्वराज्यस्य मूलमिन्द्रियजयः। इसीलिए ही भारतीय संस्कृति में संयम, यम-नियम और आत्मानुशासन पर अत्यधिक बल दिया जाता है। स्वतन्त्र, स्वाधीन शब्द भी इसी भाव को व्यक्त करते हैं।

जिस प्रकार घर की सुन्दरता चीजों की अधिकता पर निर्भर नहीं होती, अपितु उपस्थित वस्तुओं की व्यवस्था पर ही निर्भर होती है। वैसे ही जीवन से सुख, शान्ति, सन्तोष और आनन्द की प्राप्ति का सम्बन्ध केवल धन, ज्ञान आदि से नहीं है, अपितु इनकी तथा दिनचर्या और जीवनचर्या की व्यवस्था पर निर्भर है।

जैसे कि खाने-पीने की इच्छा स्वाभाविक है ,अतः यह जरूरी नहीं, कि सब कुछ हर समय खाया जाए, अपितु दूरदर्शिता की माँग है कि हित-अहित का ध्यान रखते हुए ऋत-मित भोजन लिया जाए। वैसे तो धन, भोजन, सम्भोग की सारी इच्छायें किसी की भी पूरी नहीं हो सकतीं। अतः संयम, व्यवस्था, मर्यादा में ही सुख है। वस्तुतः सुख-दुःख प्राप्त करना बहुत कुछ हमारे विवेक पर निर्भर है। हम चाहें तो सुख अर्जित कर सकते हैं या दुःख। यह सब हमारे विचारों और जीने के ढंग पर अधिक निर्भर है। इसीलिए एक-एक कार्य में सुख अनुभव करता है और दूसरा दुःख मानता है।

6. धर्म और सुख-

पूर्व विवेचन से यह स्वतः स्पष्ट हो जाता है, कि दिनचर्या और जीवनचर्या की व्यवस्था ही सुख का

आधार है। इनकी व्यवस्था को व्यवस्थित बनाना ही धर्म है। धर्म शब्द 'धृ' धातु से बनता है, अतः उन्ही बातों का नाम धर्म है, जिनके धारण, पालन से सुख होता है। वैशेषिक दर्शन (१/१/२) महाभारत (१२/११०/१०-११;२५१,४;२५४, ६) आदि के वचनों से भी यही प्रमाणित होता है। मनुस्मृति (६/६२) के प्रसिद्ध धृतिः क्षमा वाले धर्मलक्षणों में उन्हीं बातों का ही संकेत है, जिनसे दिनचर्या और जीवनचर्या व्यवस्थित होती है। यह ठीक है, कि शास्त्रों में धर्म शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है, पर **'आचारः परमो धर्मः** (मनु. १/१०८) ही मुख्य है। अतः पारस्परिक व्यवहारों को व्यवस्थित बनाकर जन-जन को सुखी बनाने वाले सत्य, स्नेह, ईमानदारी आदि आचार=व्यवहार ही धर्म हैं।

7. सफलता और सुख-

प्रत्येक व्यक्ति जैसे अपनी चाहना की पूर्ति पर सुख अनुभव करता है। वैसे ही हर एक की कामना होती है, कि मेरा यह कार्य सफल हो, क्योंकि तभी वह सुखी हो सकता है। कार्य-कामना का मूर्तरूप होता है। कार्य के असफल होने पर व्यक्ति दुःखी, निराश, उदास हो जाता है। कई वार तो असफल होने पर हताश होकर व्यक्ति आत्महत्या तक कर लेता है।

प्रत्येक का यह अनुभव है, कि किसी कार्य में सफलता तभी प्राप्त होती है जब व्यक्ति उस-उस क्षेत्र के अनुसार सही ढंग अपनाता है, अन्यथा सारा किया कराया धन, श्रम, शक्ति का व्यर्थ होकर रह जाता है। जैसे कि रसोई के ढंग से ही सभी की रसोई तैयार होती है और कृषि की प्रक्रिया को अपनाने से ही सबको अच्छा फसल प्राप्त होती है। **क्रमशः....**

लेखक- आचार्य भद्रसेन
दर्शनाचार्य, होशियारपुर

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 264/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफीस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत, डॉ. बी.पी. भटनागर; उदयपुर, डॉ. अवन्त कुमार सचेती; उदयपुर

लेखक- प्रकाश आर्य

आर्यसमाज का राष्ट्र को योगदान

संसार में आर्यसमाज एकमात्र ऐसा संगठन है जिसके द्वारा धर्म, समाज और राष्ट्र तीनों के लिए अभूतपूर्व कार्य किए गए हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

वेदों से परिचय - वेदों के सम्बन्ध में यह कहा जाता था कि वेद तो गए, पाताल में चले गए। किन्तु महर्षि दयानन्द के प्रयास से पुनः लुप्त वेदों का परिचय समाज को हुआ और आर्यसमाज ने उसे देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी पहुँचाने का कार्य किया। आज अनेक देशों में वेद ऋचाएँ गूँज रही हैं, हजारों विद्वान् आर्यसमाज के माध्यम से विदेश गए और वे प्रचार कार्य कर रहे हैं। आर्यसमाज की यह समाज को अपने आप में एक बहुत बड़ी देन है।

सबको पढ़ने का अधिकार- वेद के सम्बन्ध में यह प्रतिबन्ध था कि स्त्री और शूद्र को वेद पढ़ने या सुनने का अधिकार भी नहीं था। किन्तु आज आर्यसमाज के प्रयास से हजारों महिलाओं ने वेद पढ़कर ज्ञान प्राप्त किया और वे वेद की विद्वान् हैं। इसी प्रकार आज बिना किसी जाति भेद के कोई भी वेद पढ़ सकता है। यह आर्यसमाज की ही देन है।

जातिवाद का अन्त- आर्यसमाज जन्म से जाति को नहीं मानता। समस्त मानव एक ही जाति के हैं। गुण-कर्म के अनुसार वर्ण व्यवस्था को आर्यसमाज मानता है। इसीलिए निम्न परिवारों में जन्म लेने वाले अनेक व्यक्ति भी आज गुरुकुलों में अध्ययन कर रहे हैं। अनेक व्यक्ति शिक्षा के पश्चात् आचार्य, शास्त्री, पण्डित बनकर प्रचार कर रहे हैं।

स्त्री शिक्षा- स्त्री को शिक्षा का अधिकार नहीं है, ऐसी मान्यता प्रचलित थी। महर्षि दयानन्द ने इसका खण्डन किया और सबसे पहला कन्या विद्यालय आर्यसमाज की ओर से प्रारम्भ किया गया। आज अनेक कन्या गुरुकुल आर्यसमाज के द्वारा संचालित किए जा रहे हैं।

विधवा विवाह- महर्षि दयानन्द के पूर्व विधवा समाज के लिए एक अपशगुन समझी जाति थी। सती प्रथा इसी का एक कारण था। आर्यसमाज ने इस कुरीति का विरोध किया तथा विधवा-विवाह को मान्यता दिलवाने का प्रयास किया।

छुआछूत का विरोध- आर्यसमाज ने सबसे पहले जातिगत ऊँचनीच के भेदभाव को तोड़ने की पहल की। इसी आधार पर बाद में कानून बनाया गया। अछूतोद्धार के सम्बन्ध में आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ने अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन में सबसे पहले यह प्रस्ताव रखा था जो पारित हुआ था।

राष्ट्रचिन्तन- परतन्त्र भारत को आजाद कराने में

महर्षि दयानन्द को प्रथम राष्ट्र पुरोधा कहा गया। सन् १८५७ के समय से ही महर्षि ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जनजागरण प्रारम्भ कर दिया था। सन् १८७० में लाहौर में विदेशी कपड़ों की होली जलाई। स्टॉम्प ड्यूटी व नमक के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा परिणामस्वरूप आर्यसमाज के अनेक कार्यकर्त्ता व नेता स्वतन्त्रता संग्राम में देश को आजाद करवाने के लिए कूद पड़े।

स्वतन्त्रता आन्दोलनकारियों के सर्वेक्षण के अनुसार स्वतन्त्रता के लिए ८० प्रतिशत व्यक्ति आर्यसमाज के माध्यम से आए थे। इसी बात को कांग्रेस के इतिहासकार डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने भी लिखा है। लाला लाजपतराय, पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, शहीदे आजम भगत सिंह, श्यामजी कृष्ण वर्मा, मदनलाल ढींगरा, वीर सावरकर, महात्मा गाँधी के राजनैतिक गुरु गोपालकृष्ण गोखले आदि बहुत से नाम हैं।

गुरुकुल- सनातन धर्म की शिक्षा व संस्कृति के ज्ञान केन्द्र गुरुकुल थे, प्रायः गुरुकुल परम्परा लुप्त हो चुकी थी। आर्यसमाज ने पुनः उसे प्रारम्भ किया। आज सैकड़ों गुरुकुल देश व विदेश में हैं।

गौरक्षा अभियान- ब्रिटिश शासन के समय में ही महर्षि दयानन्द ने गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने व गौवध पर पाबन्दी लगाने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया था। 'गोकरुणानिधि' नामक पुस्तक लिखकर गोवंश के महत्त्व को बताया। महर्षि दयानन्द ने गोरक्षा को एक अत्यन्त उपयोगी और राष्ट्र के लिए लाभदायक पशु मानकर उसकी रक्षा का सन्देश दिया। ब्रिटिश राज के उच्च अधिकारियों से चर्चा की, ३ करोड़ व्यक्तियों के हस्ताक्षर गोवध के विरोध में करवाने का कार्य प्रारम्भ किया, गोकरुणानिधि नामक पुस्तक लिखी जिसमें गाय के अनेक लाभों को दर्शाया। गो-हत्या के विरोध में कई आन्दोलन आर्यसमाज ने किए। आज गो-रक्षा हेतु लाखों गायों का पालन आर्यसमाज द्वारा संचालित गोशालाओं में हो रहा है।

हिन्दी को प्रोत्साहन- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने के लिए एक भाषा को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिलाने के लिए सर्वप्रथम प्रयास किया। उसका प्रत्यक्ष उदाहरण है अहिन्दी भाषी प्रदेशों या विदेशों में जहाँ-जहाँ आर्यसमाज हैं वहाँ हिन्दी का प्रचार है।

यज्ञ- सनातन धर्म में यज्ञ को बहुत महत्त्व दिया है। जितने शुभ कर्म होते हैं। उनमें यज्ञ अवश्य किया जाता है। यज्ञ शुद्ध पवित्र सामग्री व वेद के मन्त्र बोलकर करने का विधान है। किन्तु यज्ञ का स्वरूप बिगाड़ दिया गया था। यज्ञ में हिंसा हो रही थी। बलि दी जाने लगी थी। सबको यज्ञ करने का अधिकार दिया ।

वेद मन्त्रों के स्थान पर दोहे और श्लोकों से यज्ञ किया जाता था। यज्ञ का महत्त्व भूल चुके थे। ऐसी स्थिति में यज्ञ के सनातन स्वरूप को पुनः आर्यसमाज ने स्थापित किया, जन-जन तक उसका प्रचार किया और लाखों व्यक्ति नित्य हवन करने लगे। प्रत्येक आर्यसमाज में जिनकी हजारों में संख्या है, सभी में यज्ञ करना आवश्यक है।

इस प्रकार यज्ञ के स्वरूप और उसकी सही विधि व लाभों से आर्यसमाज ने ही सबको अवगत करवाया।

शुद्धि संस्कार व सनातन धर्म रक्षा- सनातन धर्म से दूर हो गए अनेक हिन्दुओं की पुनः शुद्धि कर सनातन धर्म में प्रवेश देने का कार्य आर्यसमाज ने ही प्रारम्भ किया। इसी प्रकार अनेक भाई-बहन जो किसी अन्य सम्प्रदाय में जन्मे यदि वे सनातन धर्म में आना चाहते थे, तो कोई व्यवस्था नहीं थी, किन्तु आर्यसमाज ने उन्हें शुद्ध कर सनातन धर्म में दीक्षा दी यह मार्ग आर्यसमाज ने ही दिखाया। इससे करोड़ों व्यक्ति आज विधर्मी होने से बचे हैं।

सनातन धर्म का प्रहरी- जब-जब सनातन धर्म पर कोई आक्षेप लगाए, महापुरुषों पर किसी ने कीचड़ उछाला तो ऐसे विधर्मियों को आर्यसमाज ने ही जवाब देकर चुप किया। हजारों शास्त्रार्थ आर्यसमाज ने

सनातन धर्म की शुद्धता के लिए किए। हैदराबाद निजाम ने साम्प्रदायिक कट्टरता के कारण हिन्दू मान्यताओं पर १६ प्रतिबन्ध लगाए थे जिनमें धार्मिक, पारिवारिक, सामाजिक रीतिरिवाज सम्मिलित थे। सन् १९३७ में पन्द्रह हजार से अधिक आर्य व उसके सहयोगी जेल गए, तीव्र आन्दोलन किया, कई शहीद हो गए। निजाम ने घबराकर सारी पाबन्दियाँ उठा लीं जिन व्यक्तियों ने आर्यसमाज के द्वारा चलाए आन्दोलन में भाग लिया, कारागार गए उन्हें भारत शासन द्वारा स्वतन्त्रता संग्राम सैनानियों की भाँति सम्मान देकर पेंशन दी जा रही है।

सन् १९८३ में दक्षिण भारत के मीनाक्षीपुरम् में पूरे

गाँव को मुस्लिम बना दिया था। शिव मन्दिर को मस्जिद बना दिया था। सम्पूर्ण भारत से आर्यसमाज के द्वारा आन्दोलन किया गया और वहाँ जाकर हजारों आर्यसमाजियों ने शुद्धि हेतु प्रयास किया और पुनः सनातन धर्म में सभी को दीक्षित किया। मन्दिर की पुनः स्थापना की।

काश्मीर में जब हिन्दुओं के मन्दिर तोड़ना प्रारम्भ हुआ तो उनकी ओर से आर्यसमाज ने प्रयास किया और शासन से करोड़ों का मुआवजा दिलवाया।

ऐसे अनेक कार्य हैं, जिनमें आर्यसमाज सनातन धर्म की रक्षा के लिए आगे आया और संघर्ष किया, बलिदान भी दिया।

इस प्रकार आर्यसमाज सनातन धर्म रक्षक, मानव मात्र की उन्नति करने वाला संगठन है, जिसका उद्देश्य शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना है। वह अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति मानता है।

इसलिए आर्यसमाज के द्वारा चलाए जा रहे व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र उत्थान के इस आन्दोलन में आप भी उसके सहयोगी बनें। आर्यसमाज मानव मात्र का हितैषी है। इससे दूरी ना रखें अन्यथा-

जिन्हें फिक्र है जख्म की, उन्हें कातिल समझते हैं।
फिर तो, ये जख्म कभी ठीक हो नहीं सकता।।

-प्रकाश आर्य

आर्य समाज न होता तो, वेदों का मान कहाँ होता।
सब कुछ होता लेकिन, हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान नहीं होता।।
धर्म-कर्म की गलियाँ, अपनी-अपनी राहों पर जातीं हैं।
राह भिन्न हो तो, मंजिल दूर रह जाती है।
कर्म महान् न हो तो, कर्त्ता कभी महान् नहीं होता।
सब कुछ होता लेकिन, हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान नहीं होता।।

महू (मध्य प्रदेश)

भीतर की चाँदनी

गतांक से आगे.....

जिन्दगी प्रसन्नता से न जी सके तो मृत्यु भी विषाद ही प्रतीत होगी। मृत्यु को सहज समाधिमय बनाना चाहते हो, जिन्दगी में अमन-चैन कायम करना चाहते हो, आराम से जीवन बिताना चाहते हो तो अपने मस्तिष्क में मँडराने वाले अनर्गल विचारों से स्वयं को मुक्त करें। प्रातःकालीन चैतन्य-ध्यान की औषधि आपको ऊर्जस्वित मानसिकता के लिए ही दी जाती है। जैसे सुबह दवा की गोली खाते हो तो उसका प्रभाव शाम तक रहता है और शाम को ली हुई गोली का असर सुबह तक रहता है, ठीक वैसे ही सुबह किये गये चैतन्य-ध्यान का प्रभाव शाम तक और शाम को किए गए संबोधि-ध्यान का प्रभाव सुबह तक रहना चाहिए। अगर आप निरन्तर प्रतिदिन सुबह-शाम ध्यान करते रहे तो आपका जीवन आनन्द, उत्सव और धन्यता से सराबोर बन जाएगा और निरर्थक विचारों के गोल चक्कर से बचे रहोगे। रात के सारे विचार सुबह के ध्यान में पीछे छूट गए और दिनभर के निरर्थक विचार संध्या के ध्यान में विलीन हो गए। सुबह और शाम का ध्यान हमारे जीवन में दी जाने वाली एक औषधि है जिससे पूरा जीवन आनन्द से जी सकें।

एक फकीर हुए जो सदा हँसते रहते थे। उनके जीवन का ध्येय था स्वयं भी हँसूगा और दूसरों के जीवन में भी प्रसन्नता के फूल भरूँगा। उन्होंने सारा जीवन प्रसन्नता से जीया । जब जीवन की सांध्य-वेला निकट आई, सारे भक्त आस-पास इकट्ठे हो गए। लेकिन फकीर का तो एक ही काम कि कुछ ऐसा कह देना कि लोग हँसते रहें। उसने अपने भक्तों को बताया कि तीन दिन बाद उसकी मृत्यु होने वाली है लेकिन मेरी मृत्यु पर कोई रोना नहीं। मेरी आत्मा को अगर प्रसन्न देखना चाहते हो तो कोई भी अश्रु न बहाना, कोई उदास भी मत होना। अत्यन्त प्रसन्न रहना और मेरी मृत्यु को भी अपने लिए उत्सव समझना। जब उसे स्वयं पता चल गया कि मैं तीन दिन में मरने वाला हूँ तो वह चौबीस घण्टे हँसने-हँसाने लगा। उसने लोगों को जितना हँसाया उसे सुनकर तो एक बार मुर्दे को भी हँसी आ जाए। जिस सन्त ने हँसी को, प्रसन्नता को अपना जीवन समर्पित किया हो वह अंतिम समय में उदासी कैसे दे सकता है। जीते-जी तो प्रसन्नता लुटाई ही मरकर भी हँसी के फूल खिलाए। मेरे प्रभु! जीवन को हँसते-हँसते जीओ उस फकीर की तरह।

तुम कितनी दुःख भरी जिन्दगी जी रहे हो। तुम्हारे आँसू बाहर भले ही दिखाई न देते हों, लेकिन तुम्हारा दिल। वह तो रोया करता है। कभी पति से शिकायतों को लेकर तो कभी पत्नी के क्रूर स्वभाव से। कभी व्यापार से घाटा हो गया, कभी बच्चे बिगड़ गए उन्हें देखकर। तुम्हारा जीवन अवसाद का घरोंदा हो गया है जिसमें प्रसन्नता के फूल मुरझा गए हैं। दिमाग निरर्थक विचारों का पुलिंदा बन गया है, कूड़े का ढेर हो गया है। बाहर का कचरा तो साफ भी हो जाता है तुम बुहारी कर देते हो लेकिन दिमाग में भरे कचरे का क्या होगा? उसे कैसे साफ करोगे? ध्यान वह

बुहारी है जो मस्तिष्क के कचरे को साफ कर सकती है। अपने मन को मौन करने के लिए जीवन को शान्ति और आनन्द से भरने के लिए ध्यान की बुहारी लगाओ।

भगवान बुद्ध ने कहा था- समाधि के मार्ग में प्रवेश करना चाहते हो तो सबसे पहले स्वयं को निर्विकल्प करने का प्रयास करो। जब तक तुम्हारे भीतर अनर्गल विचारों की गंदगी भरी हुई है, ऊपर चाहे जितने बरक लगा देना, गंदगी तो छिपी ही रहेगी। आप जानते हैं दिन-प्रतिदिन बढ़ने वाली दुर्घटनाओं का क्या कारण है? मैं कहूँगा मस्तिष्क में उपजने वाले निरर्थक विचार। सड़क पर तो मनुष्य वाहन चला रहा है लेकिन उसका दिमाग वहाँ नहीं है, वह किन्हीं और विचारों में उलझा हुआ है। वह कहीं दूर की सोच रहा है। और जब व्यक्ति की तन्मयता, एकाग्रता एक ओर नहीं रहती, जहाँ वह होता है वहाँ नहीं होती, तो उसके जीवन में दुर्घटनाएँ घटित होंगी ही।

अगर किसी के जीवन में मनोशान्ति उपलब्ध हो जाती है, शान्त दशा प्राप्त हो जाती है तो उसे चाहे जितने कार्यों में उलझना पड़े लेकिन उनसे वह तुरन्त मुक्त भी हो जाएगा। वह जब चाहेगा अपने मूल उत्स में लौट सकेगा। सारा जीवन तो कूड़ेकचरे में बिता दिया अब क्या जीवन की अन्तिम किस्त में भी वह कूड़ा-कचरा रखना है? मैंने पहले भी कहा था जब व्यक्ति शान्त चित्त होकर मृत्यु के द्वार में प्रवेश करता है तब उसके सामने न स्वर्ग का प्रलोभन होता है और न नरक के यम का भय। वह निर्विचार होकर अपने जीवन में निर्वाण की ज्योति जला लेता है।

निरर्थक अंधविश्वास और निरर्थक विचार दोनों से बचना चाहिए, तुम पापड़ सेंकते हो आँच पर। देखो, कितनी तन्मयता, जागरूकता और एकाग्रता से सेंकते हो। कहीं से कच्चा न रह जाए या कहीं से जल न जाए। कभी अपने विचारों की ओर ध्यान दिया? नहीं, वे तो आ रहे हैं, जा रहे हैं। मस्तिष्क में आवाजाही जारी है। उनकी तनिक भी उपयोगिता नहीं है पर मानसिक संघर्ष जारी है। बाहर से शान्त हो, कुछ नहीं बोल रहे हो, पर भीतर तनावग्रस्त हो, फूट पड़ने को तैयार बैठे हो। मौका नहीं मिले तो कुंठित हो जाते हो। मैं चाहता हूँ इन विचारों के साक्षी हो जाओ। विचारों को आने-जाने दो, पर स्वयं को उनसे मत जोड़ो। देखो और देखते चले जाओ, वे स्वयं से छूट जाएँगे, उनके बोझ से तुम मुक्त हो जाओगे।

कहते हैं, जर्मन विचारक हैरीगिल जापान गया। उसने सोचा था वहाँ किसी सन्त से मिलूँगा और अपने जीवन में ध्यान को उपलब्ध करने का प्रयास करूँगा। भारत के बाद जापान ही विश्व में ऐसा देश है जिसने ध्यान की ऊँचाइयों को पाया है। हैरीगिल ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि मैंने ध्यान को पाने के लिए हर सम्भव प्रयास किए। न जाने कितने सन्त-फकीर महात्मा से मिला, आत्म-साधकों से मिला, कइयों ने उपदेश दिए, सन्देश दिए लेकिन मेरे जीवन में ध्यान घटित नहीं हुआ। मैं अपने तीन वर्षों के जापान प्रवास में ध्यान को उपलब्ध नहीं हो पाया।

उसने वापस जर्मनी जाने की तैयारी की। होटल का बिल चुकाया और जाने को तत्पर हुआ। तब होटल मालिक ने उसे एक दिन और रुकने का आग्रह किया। हैरीगिल बोला जो बात पिछले तीन वर्षों में घटित नहीं हुई वह आज एक दिन में कैसे हो सकती हो। होटल मालिक ने आग्रह किया कि वह केवल एक दिन और रुक जाए। उसने कहा, 'मैं तुम्हें एक फकीर से मिलाना चाहता हूँ।' हैरीगिल बोला, 'बहुत हो गया मैं किसी फकीर से नहीं मिलना चाहता। मैं थक चुका हूँ, मैं कहीं नहीं जाऊँगा।' होटल मालिक बोला, 'तुम अपने कमरे में ठहरो मैं उस फकीर को ही बुला लाता हूँ।' और होटल के मालिक ने बोकोजू को आमंत्रित किया।

बोकोजू आए और होटल की छत पर जाकर बैठे। हैरीगिल भी उनके साथ छत पर पहुँचा और उनके सामने बैठ गया। कुछ दूसरे लोग भी इकट्ठे हो गए।

ध्यान की चर्चा चलने लगी कि अचानक भयंकर तूफान आया तूफान के साथ भूकम्प भी आ गया। सारी धरती डाँवाडोल होने लगी। मकान, दुकान, होटल लकड़ी के थे, इसके बावजूद भी लोग बाहर मैदानों की ओर दौड़ने लगे। बोकोजू के सामने बैठे

सभी लोग इधर-उधर हो गए। यहाँ तक कि वह जर्मन विचारक भी जाने लगा। लेकिन बोकोजू तो वहीं बैठे रहे उसी मस्ती में। आँखें बन्द की और जमे रहे।

अचानक हैरीगिल को खयाल आया कि सब लोग तो चले गए, उस फकीर का क्या होगा? वह भागा-भागा वापस आया। उसने देखा होटल का पूरा भवन हिल रहा था लेकिन वह फकीर। वह तो वैसा का वैसा बैठा था अडिग, उसने सोचा जब फकीर नहीं हिल रहा तो मैं भी यहीं बैठ जाता हूँ। वह बैठ तो गया लेकिन भीतर से बहुत काँप रहा था कि बोकोजू पर विश्वास करके बैठ तो गया हूँ अगर यह मकान धराशायी हो गया तो! हैरीगिल बेतरह पसीना-पसीना हो रहा था, बड़ा बेचैन किन्तु फकीर की काया तो वहाँ प्रतिमा की तरह विराजमान थी। कुछ समय बाद भूकम्प शान्त हुआ और बोकोजू ने आँख खोलीं और जहाँ पर चर्चा रुकी थी वहीं से अपनी बात शुरू कर दी। चर्चा पूरी हुई तब उस जर्मन विचारक ने पूछा, 'बोकोजू! मैंने आप जैसा फकीर आज तक नहीं देखा। मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ जब भूकम्प आया तक यहाँ आपके सामने बैठे लोग इधर-उधर होने लगे, वे भागने लगे आप क्यों बैठे रहे?' बोकोजू बोले, 'मैं भी भागा था। तुम सब बाहर की ओर भागे थे, बाहर की दौड़ लगाई थी और मैं अन्दर की ओर दौड़ा था, भीतर गया था। और तुम लोगों ने जहाँ दौड़ लगाई वहाँ भी भूकम्प आ रहा था और मैं जहाँ जाकर रुका वहाँ न पहले, न बाद में और न वर्तमान में कोई भूकम्प रहा।' हैरीगिल तब से बोकोजू का चरणोपासक हो गया।

जब साधक साधना की इस दशा में पहुँच जाता है कि पृथ्वी तल पर आने वाला भूकम्प उसकी चेतना को प्रभावित नहीं कर पाता। वह अपने अस्तित्व के उस शिखर पर पहुँच जाता है जहाँ नितान्त शान्ति है, कोई कम्पन या आपाधापी नहीं है। यह परम आनन्द की अवस्था है। हमारे जीवन में हर पल भूकम्प उमड़ते रहते हैं। हर समय तुलनात्मक विकल्प विचार चलते रहते हैं।

एक महिला का पति काला है, पर पड़ोसन का पति गोरा है। अब जब भी उसे वह गोरा दिखाई देता है उसके मस्तिष्क में अपने पति का कालापन चोट मारता है। जब-जब व्यक्ति दूसरे को खुश-प्रसन्न-आनन्दित देखता है उसके मन में चोट लगती है। तुलना-तुलना, दूसरे से अपनी तुलना। तुम्हारे पास साइकिल है लेकिन पड़ोसी के पास स्कूटर है तुम व्यथित हो जाते हो। हमारी तुलनात्मक आकांक्षा का कोई अन्त नहीं है।

तुम तो शान्त व्यक्ति को देखकर भी ईर्ष्या करने लगते हो। तुम सोच भी नहीं पाते कि उसने इतना शांत मन कैसे पा लिया? वह साधु कैसे हो गया? मैं यह सब क्यों न कर पाया? तुम तो सन्त की शान्ति, मौन पर भी ईर्ष्या और स्पर्धा करोगे।

ऐसा हुआ- एक युवक किसी संत के पास पहुँचा और बोला, 'आप तो बहुत शान्त हैं और मेरी अशान्ति छूटती नहीं। मुझे इसी बात का गम है, इसी बात की शिकायत है।' सन्त उस युवक को कुटिया के बाहर लाया वहाँ चिनार का एक वृक्ष था, उसी के पास दूसरा छोटा वृक्ष भी था। सन्त ने कहा, 'देखो, एक

वृक्ष आकाश को चूम रहा है और दूसरा बमुश्किल तीन चार फुट का है लेकिन युवक मैंने आज तक इस छोटे वृक्ष की आँख में आँसू नहीं देखे। कभी इसे शिकायत करते भी नहीं पाया कि हे परमात्मा! मुझे तो इतना नीचा बनाया है और इसे इतना ऊँचा बना दिया। यह जैसा है, जिस स्थिति में है, अत्यन्त प्रसन्न है। इसमें भी फूल लगते हैं, फल आते हैं, हवा से हिलोरें भी लेता है पर कभी पड़ोसी से ईर्ष्या नहीं करता।' जीवन जीना है सिर्फ स्वयं के साथ जीना है, तुलनाएँ छोड़ दो।

ध्यान तुम्हारे जीवन में दो कार्य करेगा, एक तो निरन्तर उत्पन्न होने वाले निरर्थक विचारों से मुक्ति दिलाएगा। दूसरे, तुम्हारे जीवन में निर्विचार समाधि को उपलब्ध कराने का प्रयास करेगा। ज्यों-ज्यों निरर्थक विचार बाहर आएँगे शान्त अवस्था स्वयमेव प्रवेश करेगी। और यदि तुम निरर्थक विचार से मुक्त न हो पाए तो जीवन भर अच्छा-बुरा करने के बाद भी कोरे के कोरे रह जाओगे। भीतर का पात्र यदि जहर से भरा हुआ है और कोई अमृत भी उड़ेल दे तो वह भी जहर ही हो जाएगा। पहले अपने पात्र को रिक्त, निर्मल कर दो फिर तो अस्तित्व उसे खुद ही भर देगा।

ध्यान तुम्हें कृत्य से मुक्ति नहीं दिलाता है अपितु कर्तृत्व-भाव से मुक्ति दिलाता है। तुम संसार के सभी कार्य करते हुए भी, उन सबके साक्षी हो जाओगे। श्री चन्द्रप्रभ जी की पंक्ति है-

दीप जलेंगे बुझा करेंगे, तारों में टिमटिम होगी,
वह अखण्ड है जो साक्षी है, ज्योतिर्मयता अविचल होगी।

अरे! ज्योति तो वह बुझेगी जिसमें तेल और बाती हो; यह तो बिना तेल-बाती की शाश्वत ज्योति है यह कैसे बुझ सकती है! यह तो निर्धूम प्रकाश है जिसे दूसरा तो क्या तुम स्वयं भी चाहो तो भी न बुझा पाओगे। हाँ! संसार की माया के चलते इस ज्योति पर कोई आवरण आ जाएगा। ऐसे ही जैसे किसी जलते हुए दीपक पर गिलास रख दी जाए तो उसका प्रकाश गिलास में ही रह जाएगा। वह मिटा नहीं है, ज्योति बुझी नहीं है, बस प्रकाश गिलास में सिमट गया है। आपने गिलास हटा दिया, कोई दूसरा बड़ा, उससे बड़ा बर्तन ढक दिया तो? प्रकाश का भी विस्तार होता जाए। और अगर उसे कमरे में रख दें तो पूरा कमरा प्रकाशित हो जाएगा। और यदि उसे भवन की छत पर रख दें तो पूरा वातावरण टिमटिमा उठेगा। अगर आपका दीपक जल चुका है तो उसकी तरंगें भी हरवलय और वलय के पार पहुँच चुकी हैं। यदि आप ज्योतिर्मय हो चुके हैं तो कभी भी उस तल को स्पर्श कर सकते हैं, जो परम शिखर है जहाँ आनन्द है, शान्ति है, समाधि है। वह अस्तित्व का गुरु-शिखर है जो आपको पाना है। ध्यान आपको उन तलों तक पहुँचाए, भीतर की चाँदनी, भीतर की रोशनी हमें प्रमुदित करे यही शुभकामना है।

लेखक- महोपाध्याय ललितप्रभ सागर जी
साभार- ध्यान योग विधि और वचन

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास | **भवानीदास आर्य**, मंत्री-न्यास | **डॉ. अमृत लाल तापड़िया**, संयुक्तमंत्री-न्यास

द्राक्षा
(Vitis vinifera)

महर्षि चरक ने अत्यन्त हितकारी द्रव्यों में द्राक्षा का उल्लेख किया है। द्राक्षा ऐसी औषधी है जो स्वादु भी है और हितकारी भी है। शरीर की पुष्टि एवं समुचित वृद्धि में अन्यान्य कारणों की अपेक्षा हिताहार की विशेष प्रधानता है। महर्षि सुश्रुत के अनुसार दोष, धातु, मल किसी के भी क्षीण होने पर मनुष्य उस-उस दोष, धातु मल की वृद्धि करने वाले पदार्थों को लेने की इच्छा करता है। जब किसी कारणवश व्यक्ति का रक्तक्षीण हो जाता है तो वह द्राक्षा, अनार आदि रक्तवर्धक द्रव्यों को लेने की इच्छा करता है और इन्हें ग्रहण कर मनुष्य स्वस्थ हो जाता है। इसीलिए ऐसे रक्तवर्धक हितकारी द्रव्यों को निरन्तर सेवन करने के लिए कहा है जिससे उक्त व्याधियाँ उत्पन्न ही न होने पायें।

द्राक्षा को हिन्दी में दाख व मुनक्का और अंग्रेजी में रेजिन्स व ग्रेप्स कहते हैं। द्राक्षा देश अवस्था व आकृति के भेद से अनेक प्रकार की होती है। भावमिश्र ने आमा द्राक्षा (कच्चा अंगूर) खट्टा अंगूर, गोस्तनी द्राक्षा, किशमिश, पर्वतीय द्राक्षा एवं करमर्दिका के पृथक्-पृथक् गुण कहे हैं। अंगूर कच्चे रहने पर हरे, पकने पर श्वेत-हरे-पीले हो जाते हैं। सूखने पर पर यही मुनक्का हो जाते हैं। छोटे किस्म का अंगूर सूखने पर किशमिश हो जाता है। ये बड़े, छोटे, काले और वेदाना आदि कई प्रकार के होते हैं। इनमें काले अंगूर या पिटारी अंगूर श्रेष्ठ माने जाते हैं।

गुण–धर्म–

रस→मधुर। गुण→सिनग्ध, गुरु, मृदु। वीर्य→शीत। विपाक→मधुर। प्रभाव→सर (विरेचन), बृहण (पौष्टिक) वीर्य कालावधि→मुनक्का एक वर्ष। दोषकर्म→स्निग्ध, गुरु, मधुर होने से वात का तथा मधुर व शीत होने से पित्त का शमन करती है।

मात्रा– पाचन शक्ति के अनुसार।

आत्ययिक प्रयोग–

दुर्बलता- (1) मुनक्का को गर्म पानी से धोकर रात्रि में भिगोकर रख देवें। प्रातः पानी पी लेवें व मुनक्का चबाकर खा लेवें। इस प्रकार इसका नियमित प्रयोग करने से कमजोरी दूर होती है, रक्त और शक्ति उत्पन्न होती है, फेफड़ों को बल मिलता है।

(2) जितना पच सके उतना मुनक्का खाकर दूध पीने से दुर्बलता दूर होकर धीरे-धीरे वजन बढ़ने लगता है।

विबन्ध- १०-१५ मुनक्का दूध में उबालकर खाने से उदर शुद्धि होने लगती है।

चक्कर आना- १-१ ग्राम सैंधा नमक व काली मिर्च लेवें। १५-२० ग्राम मुनक्का को काली मिर्च व सैंधा नमक लगाकर सेक कर खाने से भ्रम, आँखों के सामने अंधेरा आना व ज्वर आदि ठीक होते हैं। **खाँसी**- द्राक्षा, आँवला, पिण्डखजूर, पिप्पली, काली मिर्च का चूर्ण घृत व मधु के साथ लेने से लाभ होता है। द्राक्षा के बीज निकालकर इसमें तीन कालीमिर्च रखकर चबावें और रात्रि में मुख में रखकर सो जावें। इस प्रकार ५-७ दिन करने से पित्तज कास ठीक हो जाता है।

मन्दाग्नि- मुनक्का, नमक व कालीमिर्च को मिलाकर, गर्मकर खाने से भूख बढ़ती है। पुराने बुखार में भूख नहीं लगने पर विशेष लाभकारी है।

रक्तपित्त- द्राक्षा ११ नग व मुलेठी ३ ग्राम को पीसकर बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर दूध की लस्सी में मिलाकर पीने से नकसीर व मलमूत्र मार्ग से गिरने वाला रक्त बन्द हो जाता है।

मूत्रकृच्छ्र- रात्रि के समय द्राक्षा को पानी में भिगोकर रख देवें। प्रातः मसलकर छानकर इसमें जीरा मिलाकर पीने से मूत्र खुलकर आने लगता है।

इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से रोगों में अनुपान भेद से द्राक्षा का प्रयोग किया जाता है। द्राक्षावलेह, द्राक्षासव व द्राक्षारिष्ट आयुर्वेद के प्रसिद्ध योग हैं जिन्हें प्रायः सभी कम्पनियाँ बनाती हैं। द्राक्षावलेह, प्रदर, वेदनायुक्त कुक्षिशूल, बस्तिशूल और योनिशूल आदि रोगों को दूर करता है। स्त्रियों के लिए अत्यन्त हितकारी है। जीर्ण रक्तपित्त, रक्तातिसार, रक्तार्श, मूत्र रोग, दाह, वमन, चक्कर आना आदि रोग इस अवलेह से ठीक हो जाते हैं। द्राक्षासव दुर्बलता, भूख न लगना, अजीर्ण, खाँसी आदि रोगों में अत्यन्त लाभकर है।

लेखक- डॉ. वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेद वरिष्ठ चिकित्सक
१३, श्रीराम नगर, हिरणमगरी सेक्टर-६, उदयपुर

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

काशी का पुराने समय में क्या महत्व था इससे कौन अपरिचित होगा? विद्या की नगरी काशी समझी जाती थी तो दूसरी ओर मोक्ष की नगरी भी। अर्थात् लोगों को यहाँ तक विश्वास था कि काशी में अगर कोई मरता है तो उसे सीधे मोक्ष प्राप्त होता है। स्थिति यह थी कि किसी भी धार्मिक मामले में काशी के पण्डितों से कोई व्यवस्था लिखवा ली जाती थी तो उसे पूरे भारतवर्ष में प्रामाणिक माना जाता था। पाठकों को सम्भवतः याद हो कि छत्रपति शिवाजी के यज्ञोपवीत की व्यवस्था भी काशी के पण्डितों ने ही दी थी, जिसके एवज में उनको प्रचुर धन प्राप्त हुआ था। आज भी जब यज्ञोपवीत संस्कार पण्डित लोग कराते हैं तो बटुक काशी की ओर मुख करके कुछ कदम चलता है। इसका अर्थ यह है कि विद्या पढ़ने के लिए वह काशी जाएगा। तो यह है महात्म्य काशी का। परन्तु काशी का दुर्भाग्य भी था कि वहाँ प्रभूत संख्या में पण्डितों के होते हुए भी, एक भी पण्डित ऐसा नहीं था जिसने वेदज्ञान को जाना हो। क्यों? क्योंकि उन्होंने वेदों को देखा ही नहीं।

ऐसे समय में उस काशी को विजित करने के लिए एक अवधूत संन्यासी स्वामी दयानन्द सरस्वती आज आकर के आनन्द बाग में रुका है। इस प्रवास में स्वामी दयानन्द ने जब मूर्तिपूजा का खण्डन प्रारम्भ किया तो पास में ही स्थित दुर्गा के मन्दिर में जाने वाले लोगों की संख्या कम से कम होती गई। काशी के नरेश महाराजा श्री ईश्वरी नारायण प्रसाद सिंह पक्के मूर्ति पूजक थे। इन सब सूचनाओं से उनको कष्ट हुआ और वह चाहने लगे कि काशी की पण्डित मण्डली दयानन्द को शास्त्रार्थ में हरा दे और मूर्तिपूजा को वेद सम्मत सिद्ध कर दे। जब काशी के पण्डितों से महाराज ने बात की तो उन्होंने स्पष्ट अपनी अयोग्यता वर्णित कर दी।

परन्तु राजाज्ञा थी। उसका पालन तो करना ही था। शास्त्रार्थ का दिन तय हुआ। उस दिन लगभग ६०००० व्यक्ति आनन्द बाग में पहुँचे। २७ पण्डितों की मण्डली एक तरफ थी और स्वामी दयानन्द सरस्वती ईश्वर पर अटल विश्वास अपने हृदय में लिए हुए अकेले दूसरी तरफ विराजमान थे। प्रश्न उत्तर होने लगे। स्पष्ट

दिखने लगा कि काशी के समस्त पण्डितों की योग्यता एक अकेले दयानन्द के तुल्य नहीं थी और यह भी दिखने लगा कि दयानन्द की विजय सुनिश्चित है। वेदों में मूर्तिपूजा नहीं दिखलाई जा सकेगी। तो शास्त्रार्थ को विषयान्तर भी किया गया। उसमें भी पण्डित लोग स्वामी जी से जीत ना सके, तो एक चाल चली कि दो पत्र जो कि काफी पुराने थे वे यह कह कर दिए गए कि इनमें मूर्तिपूजा का समर्थन है, वेद के पत्र हैं। शाम का धुंधलका हो चुका था। स्वामी जी लालटेन की रोशनी में कठिनाई

से उन पत्रों को पढ़ रहे थे। जब कुछ समय लगने लगा तो पण्डितों के साथ महाराजा ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह जो कि मध्यस्थ भी थे, उन्होंने उठकर तालियाँ बजा दी और एक शोर उठा और तुमुल नाद होने लगा कि दयानन्द हार गए-दयानन्द हार गए। बात केवल यहीं तक नहीं थी। गुण्डे यह सोचकर आए थे कि आज दयानन्द की जीवन लीला को समाप्त कर दिया जाएगा। पत्थर उठाकर के दयानन्द की ओर फेंक, जान लेने का प्रयत्न किए जाने लगा। पर वाह रे बनारस के कोतवाल रघुनाथ प्रसाद सिंह! तुमने अपने कर्तव्य का क्या खूबी से पालन किया और स्वामी दयानन्द के जीवन की रक्षा की, उसके लिए मानवता कभी तुम्हारे नाम को भूल नहीं पाएगी।

इस शास्त्रार्थ को लेकर के जो पण्डित मण्डली के समर्थक पत्र थे उन्होंने भी असत्य का प्रचार किया, परन्तु सत्य का सूर्य अंततः छुपता नहीं है। अनेक निष्पक्ष पत्रों ने लिखा ''काशी की पण्डित मण्डली वेदों में मूर्ति पूजा सिद्ध नहीं कर पाई" मध्यस्थ के रूप में महाराज ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह ने भी एक पाप किया था। वह उनके मन को बेचैन किया रहता था। स्वामी जी जब दूसरी बार वहाँ गए तो महाराज ने क्षमा याचना भी की। यह एक प्रकार से उनका प्रायश्चित था कि वेद के एक प्रकाण्ड विद्वान् के साथ उन्होंने छल का व्यवहार किया था।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

समाचार

नवलखा महल में मनाया अन्तर्विद्यालयी नाट्य प्रतियोगिता

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर में दिनांक ३१ अगस्त २०२४ को अन्तर्विद्यालयी नाट्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं का अनुसरण करे तो भारत पुनः राष्ट्र गुरु बन सकता है। ये विचार सांस्कृतिक संस्थान एवं प्रशिक्षण केन्द्र; संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के निदेशक श्री ओमप्रकाश शर्मा ने व्यक्त किए। वे उदयपुर के गुलाब बाग स्थित नवलखा महल में महर्षि दयानन्द सरस्वती की २०० वीं जयन्ती पर उनके जीवन पर आयोजित अन्तर्विद्यालयी नाट्य प्रतियोगिता के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के मंत्री श्री भवानीदास आर्य ने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की २०० वीं जयन्ती को भव्य रूप से मनाने हेतु देश के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई है और उनकी जयन्ती को पूरे देश में भव्य रूप में मनाया जा रहा है।

इस अवसर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने बताया कि नवलखा महल की ओर से विभिन्न प्रकल्प चलाए जा रहे हैं। वहीं दूरस्थ सुदूर क्षेत्रों में वैदिक शिक्षाओं के प्रचार प्रसार के लिए भी महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं ताकि नई पीढ़ी हमारे देश की संस्कृति और गौरव का अनुसरण करती रहे।

इस अवसर पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की २०० वीं जयन्ती को भव्य रूप में मनाने के साथ-साथ वर्षभर कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया है।

इस अवसर पर निम्नलिखित विद्यालयों के विद्यार्थियों ने महर्षि दयानन्द व वैदिक शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार हेतु नाट्य प्रस्तुतियाँ दीं-

एम.डी.एस. पब्लिक स्कूल; फतहनगर, राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय; भूपालपुरा-उदयपुर, आदिनाथ पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय; उदयपुर, डीएवी उच्च माध्यमिक विद्यालय; दरीबा माइन्स, दयानन्द कन्या विद्यालय; हिरणमगरी-उदयपुर, डीएवी उच्च माध्यमिक विद्यालय; उदयपुर, सीडलिंग मॉडल पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय; उदयपुर, डीएवी उच्च माध्यमिक विद्यालय; जावर माइन्स।

जिनमें निम्नलिखित विद्यालयों ने पुरस्कार प्राप्त किए-

१. डीएवी उच्च माध्यमिक विद्यालय,जावर माइन्स- प्रथम पुरस्कार
२. सीडलिंग मॉडल पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर - द्वितीय पुरस्कार
३. डीएवी उच्च माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर- तृतीय पुरस्कार

समारोह को सम्बोधित करते हुए लोक कला मण्डल, उदयपुर के निदेशक श्री लईक हुसैन ने बताया कि जनमानस में विचारों के सम्प्रेषण हेतु नाट्य विधा एक महत्वपूर्ण साधन है। नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र महर्षि दयानन्द के विचारों का सम्प्रेषण कर रहा है। लोक कला मण्डल इस कार्य हेतु अपना सहयोग करेगा।

निर्णायक मण्डल में निम्नलिखित विषय विशेषज्ञ उपस्थित थे-

१.श्री विलास जानवी; सीनियर थियेटर आर्टिस्ट एवं रंगकर्मी
२.श्री मनीष शर्मा; थियेटर आर्टिस्ट
३.श्री ओमप्रकाश शर्मा; निदेशक-सांस्कृतिक संस्थान एवं प्रशिक्षण केन्द्र

समारोह का संचालन नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र यूथ क्लब की संयोजक एडवोकेट श्रीमती ऋचा पीयूष ने किया। इस अवसर पर नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र यूथ क्लब के श्री जयेश आर्य, सुश्री उषा चौहान, श्री शोभित मित्तल, श्री भास्कर मित्तल, श्री चिरायु पीयूष, श्री सुकृत मेहरा, श्रीमती संध्या मेहरा, श्री कपिल सोनी, सुश्री सृष्टि राठौड़, आर्य समाज हिरणमगरी के डॉ. भूपेन्द्र शर्मा, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कोषाध्यक्ष श्री नारायण लाल मित्तल, न्यासी श्री ललिता मेहरा, कार्यालय मंत्री श्री भँवर लाल गर्ग, पुरोहित श्री नवनीत आर्य, लेखाकार श्री दिव्येश सुथार, गाइड श्री लोकेश, श्री सिद्धम, श्रीमती दुर्गा गोरमात, सुश्री करिश्मा, श्री देवीलाल पारगी, श्रीमती निरमा, श्री कालू, श्री लक्ष्मण एवं अनेक कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

- भंवर लाल गर्ग; कार्यालय मंत्री, नवलखा महल, उदयपुर

ऋषि के अनन्य भक्त राजेन्द्र जी का निधन

निष्ठावान आर्य भ्राता तुल्य भाई साहब राजेन्द्र जी के निधन के समाचार से हम स्तब्ध हैं। मन बहुत दुःखी है। २०१८ के दिल्ली आर्य महासम्मेलन के अवसर पर उनके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। स्नेह एवं ममता का तो जैसे उनकी आँखों में वास था। आर्य समाज के प्रति ऐसे समर्पित कृतित्व कम ही हैं। हम कुछ भी कह लें कुछ भी कर लें विधाता के इस अटल नियम के आगे सिर झुकाना ही पड़ता है।

भाई साहब का पार्थिव शरीर तो हमारे मध्य में नहीं है परन्तु उनकी स्मृतियाँ और प्रेरणा सदैव परिवारीजनों के मध्य रहेंगी। जो मार्गनिर्देशन का कार्य करेंगी।

न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यों का परमपिता परमात्मा के श्री चरणों में निवेदन है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

हलचल

सिक्किम के महामहिम राज्यपाल श्री ओमप्रकाश माथुर ने किया नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र का अवलोकन

दिनांक २५ अगस्त २०२४ को सिक्किम के राज्यपाल का नवलखा महल; उदयपुर में पदार्पण हुआ। उन्होंने नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के सारे प्रकल्पों का अवलोकन करने के पश्चात् कहा नवलखा

महल सांस्कृतिक के प्रकल्प राष्ट्रोत्थान में सहायक हैं। उन्होंने कहा कि नवलखा महल वह पवित्र स्थल है जहाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने साढ़े छः माह विराजकर अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन किया था। उन्होंने कहा कि मुझे आज नवलखा महल का अवलोकन करते हुए अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है कि जिस स्थल पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने साढ़े छह माह प्रवास किया उस स्थल को आज विश्व पटल पर स्थापित कर दिया गया है। यहाँ जो विभिन्न प्रकल्प तैयार किए गए हैं वह वास्तव में अद्भुत तो हैं ही वरन् अनुकरणीय भी हैं।

नवलखा महल आगमन पर महामहिम का पगड़ी, उपरणा, ओ३म् दुपट्टा इत्यादि पहनाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने नवलखा महल के माध्यम से किए जा रहे कार्यों के बारे में विस्तार से बताया।

इस अवसर पर न्यास के पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ता, उदयपुर के अन्य सभी आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं अन्य अनेकों आर्यजन उपस्थित थें। – दुर्गा गोरमात; कार्यालय संयोजिका, नवलखा महल, उदयपुर

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर वेद प्रचार समारोह सम्पन्न

८ सितंबर,२०२४ आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर में दिनांक ५ सितम्बर से चल रहे वेद प्रचार समारोह का समापन आज यज्ञ एवं विद्वानों के प्रवचनों से सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री अशोक आर्य; अध्यक्ष-श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास ने की। आपने अपने उद्बोधन में कहा कि वैदिक ज्ञान, वेद शिक्षा से ही संसार का कल्याण हो सकता है। जब-जब हम वेद से दूर हुए हैं तब-तब भारत पतन के रास्ते गया है। दुनिया की सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान वेद में है। वैदिक विद्वान् आचार्य शिवशंकर अग्निहोत्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किसी व्यक्ति विशेष या जाति विशेष के लिए नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व मानवकल्याण के लिए आर्य समाज की स्थापना की। इस अवसर पर उदयपुर ग्रामीण के विधायक श्री फूलचन्द मीणा ने सत्संग सभा में उपस्थित हो आचार्यश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया। साथ ही सत्संग और गुरु के महत्व पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सत्संग एवं गुरु की कृपा से चोर भी श्रेष्ठ पुरुष बन जाता है।

इस अवसर पर उम्र के ७५ वर्ष पूर्ण होने पर आर्य समाज के कोषाध्यक्ष रमेश कुमार जायसवाल का सम्मान किया गया। प्रधान भंवर लाल आर्य ने अतिथियों का स्वागत किया। मंत्री वेदमित्र आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन भूपेंद्र शर्मा ने किया। पूर्व में इन्द्र प्रकाश वैदिक के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के मंत्री भवानी दास जी आर्य, कोषाध्यक्ष नारायण लाल मित्तल, न्यास के सदस्य व आर्य समाज हिरणमगरी के संरक्षक डॉ. अमृतलाल तापड़िया, शारदा गुप्ता, ललिता मेहरा, सरला गुप्ता, पुष्पा सिंधी, पिछोली आर्य समाज के मंत्री सत्यप्रिय आर्य, डॉ. प्रेमचन्द गुप्ता, शंकर लाल मर्मठ, प्रकाशचन्द श्रीमाली, आभा आर्या, दयानन्द कन्या विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती प्रेमलता मेनारिया, नाजुक बंसाली, सुभाष कोठारी, कृष्ण कुमार सोनी, एस. के. माहेश्वरी आदि की सार्थक उपस्थिति रही। – रामदयाल मेहरा प्रचार-मंत्री, मो. ६४६०८८३२२२

नहीं रहीं आर्य विदुषी श्रीमती मंजुलता विद्यार्थी

अत्यन्त शोक का विषय है कि प्रख्यात् विदुषी एवं लेखिका श्रीमती मंजुलता बसन्त कुमार विद्यार्थी का निधन हो गया है। 'महर्षि दयानन्द की हिन्दी भाषा को देन' विषय पर आपने अत्यन्त सराहनीय शोध कार्य किया था। उनका जाना आर्य समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्य परमपिता परमात्मा के श्री चरणों में निवेदन करते है कि दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें। परिवारजनों से निवेदन है कि न्यास की संवेदना स्वीकार करें।

न्यासी श्रीमती शारदा जी को भ्रातृशोक

अत्यन्त दुःखद समाचार संज्ञान में आया कि श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास की वरिष्ठ न्यासी माननीया डॉ. शारदा जी गुप्ता के भ्राताश्री श्री छंवरलाल जी साहिब टाक का दिनांक १३ सितम्बर २०२४ को निधन हो गया। आदरणीय टांक साहब न्यास में भी एकाधिक बार पधारे थे।

इस दुःख की घड़ी में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के सभी न्यासी बन्धु एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यगण सहभागी हैं। हम हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा के श्री चरणों में विनय करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें और परिवारिजनों को वह शक्ति प्रदान करें कि वे इस दारुण दुःख को सहन कर सकें। इन्हीं भावनाओं के साथ दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि प्रकट करते हुए। – अशोक आर्य; अध्यक्ष-न्यास

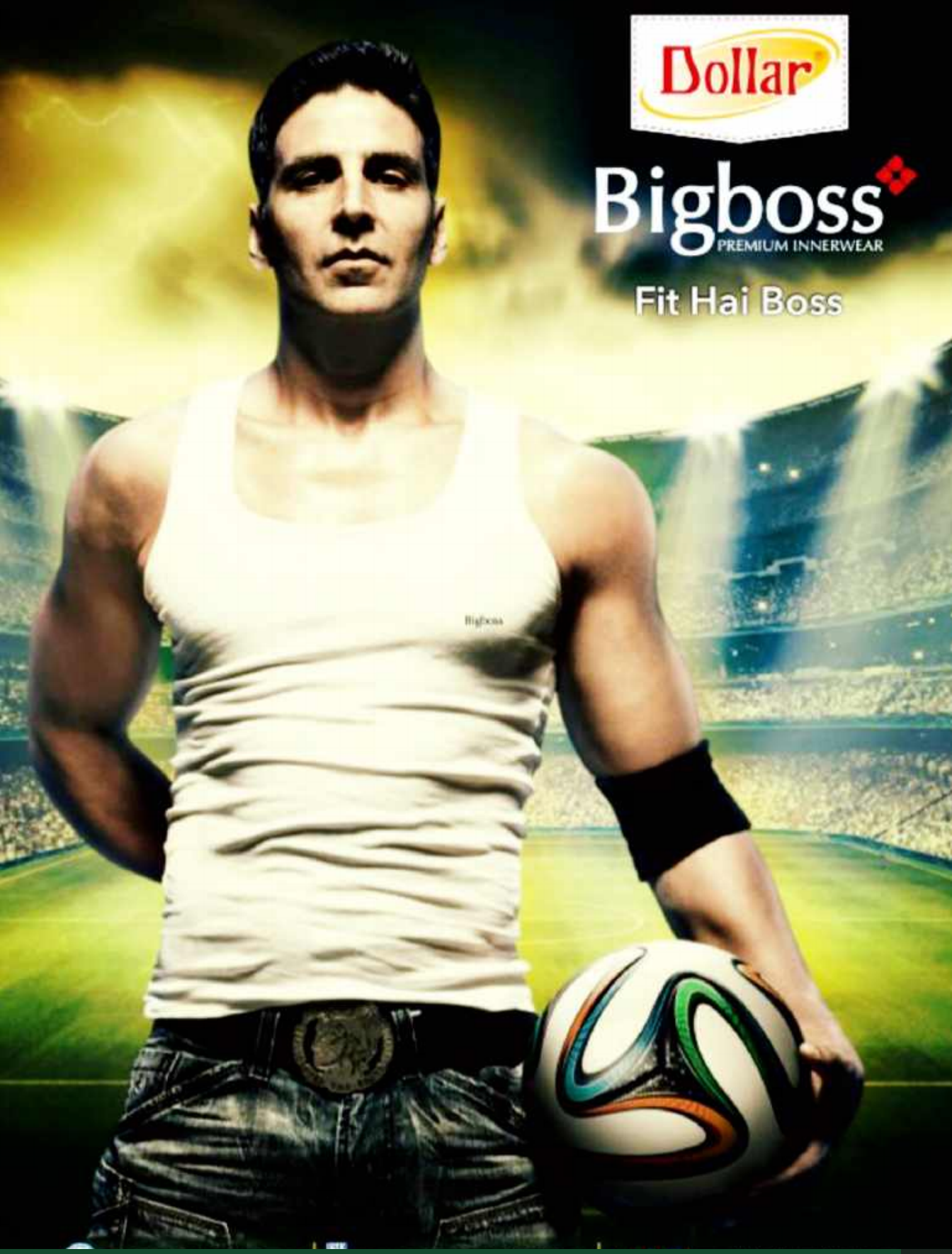

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 October-2024 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

(लिव-इन) यह पशु-पक्षियों का व्यवहार है, मनुष्यों का नहीं। जो मनुष्यों में विवाह का नियम न रहै, तो सब गृहाश्रम के अच्छे-अच्छे व्यवहार सब नष्ट-भ्रष्ट हो जायें। ..... वृद्धावस्था में कोई किसी की सेवा भी नहीं करे। और महाव्यभिचार बढ़कर सब रोगी, निर्बल और अल्पायु होकर कुलों के कुल नष्ट हो जायें। कोई किसी के पदार्थों का स्वामी वा दायभागी भी न हो सके और न किसी का किसी पदार्थ पर दीर्घकाल पर्य्यन्त स्वत्व रहे। इत्यादि दोषों के निवारणार्थ विवाह ही होना सर्वथा योग्य है।

– सत्यार्थप्रकाश चतुर्थ समुल्लास १२०

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर